ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

# देवपुत्र

कार्तिक २०८० नवम्बर २०२३

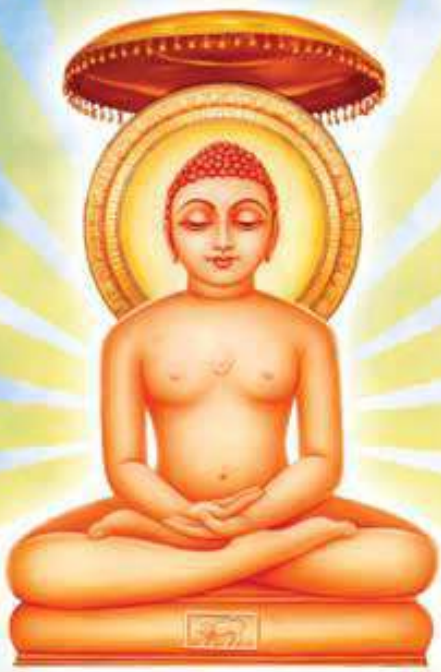

**भगवान महावीर का**
**२५५० वाँ निर्वाण वर्ष पूर्ण**

झूठ कभी न मानो-बोलो
नहीं किसी को दुख पहुँचाओ
अधिक इकट्ठा करो न कुछ भी
नहीं किसी की वस्तु चुराओ
सबको अपना-सा ही मानो
ब्रह्मचर्य का व्रत अपनाओ
पंचशील के पंचदीप से
सच्ची दीपावली मनाओ

₹ ३०

कविता

# ज्योतिर्मय हो दीवाली

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

खील खिलौने और बताशे
लाई जगमग दीवाली।
लक्ष्मी गणेश की पूजा में
सजी हुई सुन्दर थाली।।

सजा हुआ बाजार सलोने
बरतन और खिलौनों से।
रामबचाए यह खुशहाली–
घातक जादू टोनों से।

जगमग–जगमग दीप जल रहे
बिखरी पड़ती उजियाली।।

धूम मची है फुलझड़ियों की,
चर्खी और अनारों की।
सजी मिठाई की दूकानें
शोभा यह बाजारों की।
कन्दीलें भेजतीं गगन को
है अपनी अनुपम लाली।।

अम्मा–बाबा, दादा–दादी
खुश हैं सब भाई–बहना।
मुफ्त बँट रहा चलो संजोएँ–
जगमग ज्योति का गहना।

मिटे अँधेरा भेद–भाव का–
ज्योतिर्मय हो दीवाली।।

– हरदोई (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

# देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०८० ▪ वर्ष ४४
नवम्बर २०२३ ▪ अंक ०५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

**मूल्य**

| | | |
|---|---|---|
| एक अंक | : | ३० रुपये |
| वार्षिक | : | २०० रुपये |
| पन्द्रहवर्षीय | : | २००० रुपये |
| सामूहिक वार्षिक | : | १५० रुपये |

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

**संपर्क**
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

## अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

त्योहारों की रानी दीपावली भला किसे अच्छी न लगती होगी? क्या आपने कभी सोचा है कि कोई दीपावली ऐसी भी हो जो कभी समाप्त ही न हो, जिसके दीपक सदा-सदा प्रकाश बिखराते रहें। आप इन्हें सद्गुणों के दिव्य-दीपक कह सकते हैं।

पहला दीपक है **सत्य**। भारत का ध्येय वाक्य ही 'सत्यमेव जयते' है। यदि सब लोग सत्य से अलग कोई काम, कोई व्यवहार न करें तो सारे भ्रष्टाचार अपने आप कम होते जाएँगे। झूठ को मान्यता न देने वाला सदैव भय रहित रहता है।

दूसरा दीप है **अहिंसा**। यदि कोई भी व्यक्ति ऐसा कोई भी काम ही न करे कि उससे दूसरे किसी को दु:ख हो तो संसार कितना सुखी हो जाएगा। हमारी बात से, काम से या सोच से भी किसी को दु:खी न करना ही अहिंसा है।

तीसरा दीप है **अस्तेय**। चोरी करना महापाप है। किसी की अनुमति के बिना उसकी वस्तु का उपयोग करना 'अस्तेय' है। जिस वस्तु पर हमारा न्यायोचित अधिकार नहीं उसका प्रयोग अपराध ही तो है। इसलिए अस्तेय यह तीसरा दीप समझो।

चौथा दीपक है **अपरिग्रह**। जितना चाहिए उतना भर अपने लिए रखो बाकी दूसरों के उपयोग हेतु है। दूसरों को पर्याप्त मिल सके इसलिए अपनी आवश्यकता कम से कम कर सको तो बहुत अच्छा। हमारे पास पैसा है या अवसर है तो सब कुछ बटोर कर अपने पास रखना दूसरों को चाहे वह न मिले, यह बुरी बात है। इसलिए अपरिग्रही बनो।

पांचवा दीपक है **ब्रह्मचर्य**। अपना सोच, विचार, कार्य, व्यवहार सब शुद्ध हो, मर्यादित हो, संस्कारपूर्ण हो और सबका हित करने वाला हो। क्योंकि परमात्मा ही ब्रह्मरूप से सबमें हैं तो उसकी उपस्थिति को सबमें सदैव देखना, अनुभव करना ही ब्रह्मचर्य है।

बातें थोड़ी भारी-भारी-सी हो गई न? पर इन्हें करना बहुत कठिन नहीं है। बच्चे तो वैसे ही मन के सच्चे, सबको अपना मानने वाले, अपनी चीजें सबको बांट कर प्रसन्न होने वाले, आवश्यक हुआ उतना लेकर बाकी में मोह न रखने वाले और सबके लिए समान व्यवहार करने वाले होते हैं।

भगवान महावीर ने इसे **पंचशील** कहा। उनका २५५० वाँ निर्वाण दिवस पूर्ण हो रहा है इस दीपावली पर। उनको नमन करते हुए 'पंचशील' के पाँच दीए अपने जीवन में कभी न बुझने देने का निश्चय कर सकते हैं न आप! दीपोत्सव की शुभकामनाएँ। भगवान महावीर को सादर प्रणाम।

**आपका**
**बड़ा भैया**

web site - www.devputra.com

# ॥ अनुक्रमणिका ॥

## कहानी


- पौधों की दीपावली -संदीप पाण्डे 'शिष्य' १२
- रोशनी के किरदार -डॉ. सेवा नंदवाल १८
- हम किसी से कम नहीं -डॉ. रंजना जायसवाल ३०
- उजाले के फूल -सुधा रानी तैलंग ४०
- नन्हा लेखक -रेनू सैनी ४४


## छोटी कहानी


- सात्विक ने सीखी सहनशीलता -डॉ. अलका जैन 'आराधना' ०५
- जहाँ चाह वहाँ राह -डॉ. अलका जैन 'आराधना' ०८
- अनोखा नृत्य -नीलम राकेश २४


## लघुआलेख


- देवों के वैद्य धन्वन्तरि -शिवचरण चौहान ०९


## आलेख


- खिलौनों में लक्ष्मी पूजा -बनवारीलाल ऊमर वैश्य १०
- आ.जगदीशचन्द्र बसु -मनीषा बनर्जी ३६


## लघुकथा


- हकदार -मीरा जैन २५
- उजाला -डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' ३२


## कविता


- ज्योतिर्मय हो दीवाली -डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- महावीर स्वामी -डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' ०८
- झाड़ू जादूगरनी -पद्मा चौगाँकर १७
- पंच पर्व का मौसम आया -डॉ. देशबंधु शाहजहाँपुरी ३५
- भगवान बिरसा - ४६
- मन सबका हर्षाते बच्चे -बलदाऊ राम साहू ४८


## स्तंभ


- शिशु गीत -कृष्ण 'शलभ' ०६
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १४
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २०
- छः अँगुल मुस्कान २२
- घर का वैद्य -उषा भण्डारी २६
- आपकी पाती २७
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २८
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान - ३४
- राजकीय मछलियाँ -डॉ. परशुराम शुक्ल ३८
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ३९
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४२
- पुस्तक परिचय - ४९
- विस्मयकारी भारत -रवि लायटू ५१


## चित्रकथा


- दोस्तों के बिना -देवांशु वत्स २३
- झूठा -संकेत गोस्वामी ३३
- बच्चे जैसी खुराक -देवांशु वत्स ४७


## बौद्धिक क्रीडा


- बाल पहेलियाँ -डॉ. कमलेन्द्र कुमार ४८

**क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!**

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

छोटी कहानी : भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर विशेष

# सात्विक ने सीखी सहनशीलता

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

सात्विक जब क्रिकेट एकेडमी से खेलकर लौटा तो कुछ उदास सा था। माँ ने जब उससे उसकी उदासी का कारण पूछा तो उसने कहा– ''माँ! सब मेरी प्रतिभा से जलते हैं। जब मैं बल्लेबाजी का अभ्यास कर रहा होता हूँ तो मुझे परेशान करने का प्रयत्न करते हैं। मुझे बार–बार क्रोध दिलाते हैं और इसीलिए मैं गलत शॉट खेलकर आऊट हो जाता हूँ। आज मेरे प्रशिक्षक ने मुझे बहुत डाँटा और उन्होंने कहा कि यदि मैं इसी प्रकार लापरवाही से खेलता रहा तो मेरा टीम में चयन नहीं होगा।''

माँ ने उसे प्यार से अपने पास बिठाया और कहा– ''बेटा! यदि तुम्हें छोटी–छोटी बातों पर क्रोध आ जाता है तो यह तुम्हारी कमजोरी है। यदि तुम उन बातों पर ध्यान न दो तो कोई कुछ भी कहता रहे, तुम्हारे प्रदर्शन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। तुम इसे बहुत ही बुरे विचार से ले रहे हो बल्कि दूसरे बच्चों के उकसाने को तुम सकारात्मक ढंग से लो और अपने खेल में सुधार करो। तुम इतनी जरा–जरा सी बातों पर इतना क्रोध करते हो। अनदेखा किस तरह से किया जाता है और स्वयं पर नियंत्रण कैसे रखा जाता है, यह तो हम भगवान महावीर से सीख सकते हैं। आओ.... मैं तुम्हें भगवान महावीर के जीवन से जुड़ी एक कहानी सुनाती हूँ।''

सात्विक भी अपनी इस कमजोरी से पार पाना चाहता था। इसीलिए उसने कहा– ''हाँ माँ! सुनाओ ना कहानी।''

माँ ने कहानी सुनाना शुरू किया– एक बार भगवान महावीर धूप में खड़े हुए तपस्या कर रहे थे। उसी समय कुछ लोग वहाँ आए और उनकी हँसी उड़ाने लगे। एक व्यक्ति ने उन पर धूल उड़ाई लेकिन भगवान महावीर अपनी तपस्या में लीन रहे।

दूसरे ने उन पर कंकड़ फेंके लेकिन भगवान ने उनकी ओर देखा तक नहीं। तीसरे ने उन पर थूका लेकिन भगवान शांति से खड़े रहे।

यह देखकर वे सब आपस में बातें करने लगे– ''अरे... यह कैसा आदमी है! इसे तो किसी बात पर क्रोध ही नहीं आता। पागल दिखता है।''

तभी एक व्यक्ति बोला– ''यह तो कोई ढोंगी दिख रहा है... देखो मैं दिलाता हूँ इसे क्रोध।'' यह कहकर उसने बहुत सारी धूल भगवान महावीर पर फेंक दी। पर भगवान महावीर बिना विचलित हुए खड़े रहे और सबने मिलकर मुट्ठी से उन पर प्रहार किए लेकिन वे शांत खड़े रहे। उन पर मिट्टी के ढेले और पास में पड़ी हड्डियों के टुकड़े भी उन्होंने भगवान महावीर पर फेंके पर भगवान महावीर मौन साधना करते रहे।

इतनी सारी हरकतें करने के बाद जब उन्होंने भगवान महावीर के चेहरे की ओर देखा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उस मुख पर अभी असीम शांति थी और उस शांति से प्रसन्नता का आभास हो रहा था। अब उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ और वे उनके चरणों में गिर पड़े और बोले– ''प्रभु! आपको अकारण ही कष्ट दिया। हमें क्षमा करें।''

भगवान महावीर ने आँखें खोली। उनकी ओर देखा और हल्का–सा मुस्कुराए। उन व्यक्तियों में भगवान महावीर से आँखें मिलाने की सामर्थ्य नहीं थी। वे वहाँ से चले गए।

कहानी सुनाने के बाद माँ ने सात्विक से कहा– ''देखो बेटा! भगवान महावीर के व्यक्तित्व से हम यह सीख सकते हैं कि जब कोई हमें विचलित करने के लिए प्रयास करें तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए।''

भगवान महावीर ने बड़े से बड़े वारों को मुस्कुराते हुए सह लिया और तुम बच्चों की बातों से ही विचलित हो जाते हो। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। तुम्हें केवल अपने काम पर ध्यान देना चाहिए। जब तुम बड़े हो जाओ तो हो सकता है तुम्हारे सामने और भी कठिनाइयाँ आयें। यदि तुम सहनशील होकर बिना कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किए अपना काम करते रहोगे तो सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी।''

सात्विक को माँ की बात समझ में आ गई थी। उसने माँ से वादा किया कि वह अपने काम पर ध्यान देगा और बाकी सारी बातों को अनदेखा करने का प्रयत्न करेगा।

**– जयपुर (राजस्थान)**

शिशु गीत

# तोते जी

**– कृष्ण शलभ**

**तोते जी ओ तोते जी**
**कब उठते कब सोते जी**
**तुम हो इतने रट्टू क्यों**
**हरी मिर्च पर लट्टू क्यों**
**कभी जलेबी भी खाओ**
**हलवाई के घर जाओ**

**–सहारनपुर (उ. प्र.)**

# जहाँ चाह वहाँ राह

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

हार्दिक पिछले कई वर्षों से एक प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा था। किन्तु बहुत परिश्रम करने के पश्चात भी उसे सफलता नहीं मिल पा रही थी। एक बार फिर उसका परिणाम उसकी आशा से बिल्कुल विपरीत आया। अब हार्दिक बिल्कुल उदास और गुमसुम रहने लगा था। उसने परीक्षा की तैयारी करना भी बिल्कुल छोड़ दिया था। उसकी यह स्थिति माँ से देखी नहीं जा रही थी।

माँ ने उसे समझाते हुए कहा– ''बेटा! कठिनाइयाँ तो हमारी परीक्षा लेती हैं, हमें कभी हिम्मत नहीं खोना चाहिए। एक न एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब तुम्हें सफलता मिलेगी। आओ मैं तुम्हें भगवान महावीर की एक कहानी सुनाती हूँ।''

माँ ने कहानी सुनाना प्रारंभ किया।

एक बार की बात है, भगवान महावीर अपने एक शिष्य के साथ सभा के लिए जा रहे थे। वह शिष्य भगवान महावीर पर पूरा स्नेह नहीं रखता था और अधिकांश उन्हें गलत सिद्ध करने के अवसर खोजता रहता था। जब वे एक जंगल से जा रहे थे तो उस शिष्य ने भगवान महावीर से पूछा– ''क्या इस पौधे पर कभी पुष्प लगेंगे?''

भगवान महावीर ने कुछ समय के लिए अपनी आँखों को बंद कर लिया और फिर उत्तर दिया– ''हाँ, अवश्य लगेंगे।''

शिष्य ने उसी समय उस पौधे को उखाड़कर फेंक दिया और जोर–जोर से ठहाके लगाने लगा। फिर वह बोला– ''आप तो बड़े ज्ञानी हैं.... मैंने पौधे को उखाड़ कर फेंक दिया... अब बताइए कैसे लगेंगे इसमें फूल?''

भगवान महावीर ने शिष्य से कुछ नहीं कहा।

दोनों वहाँ से सभा के लिए आगे बढ़ गए। बरसात का मौसम था। मार्ग यात्रा करने लायक नहीं थे। भगवान महावीर और उनके शिष्य सभा स्थल पर लगभग एक सप्ताह रुक गए। लौटने का मार्ग वही था जिससे वे आये थे। भगवान महावीर अपने शिष्य के साथ उसी स्थल पर पहुँचे जहाँ शिष्य ने उनसे प्रश्न किया था। शिष्य ने उस पौधे को देखा जिसे उखाड़कर उसने फेंका था। वह पौधा हरा–भरा और फूलों से भरा हुआ था। यह देखकर शिष्य को बहुत आश्चर्य हुआ। शिष्य ने भगवान महावीर से पूछा– ''इस पौधे को तो मैंने उखाड़कर फेंक दिया था। यह वापस कैसे लग गया?''

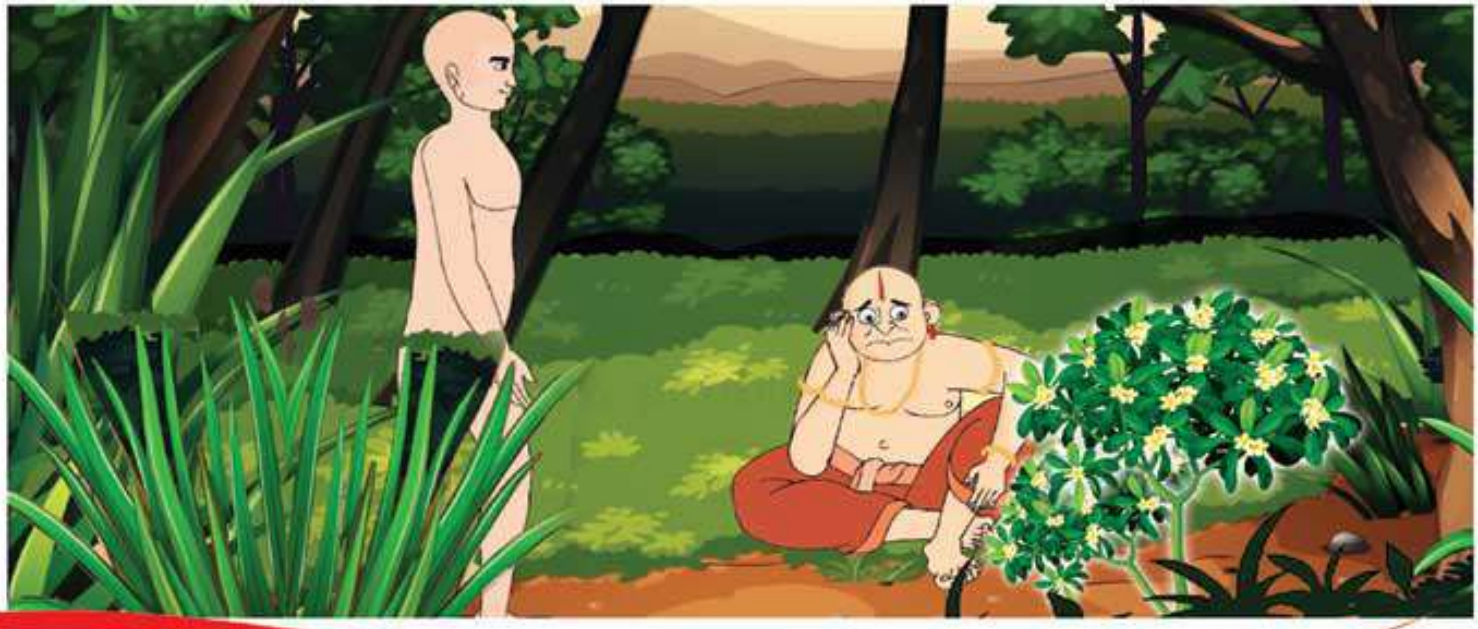

भगवान महावीर ने शिष्य से कहा– ''यह समय वर्षा ऋतु का समय है... इस पौधे ने जमीन को पकड़ लिया और फिर से पनपकर फल फूल गया। इसे कोई नहीं उखाड़ सकता क्योंकि यह जीना चाहता है। इसमें अभी जिजीविषा है, यह कठिन चुनौतियों में भी अपने आप को जीवित रखना जानता है। यही कारण है कि तुम्हारे द्वारा उखाड़ फेंकने पर भी यह पुनर्जीवित खड़ा है।''

यह कहानी सुनकर हार्दिक की आँखों में चमक आ गई थी। माँ ने उसे समझाते हुए कहा– ''कठिन चुनौतियों में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। देखो वह पौधा जमीन से उखड़ गया था, उसके बाद भी उसने फिर से अपनी जड़ों को पकड़ लिया। भीतर जीने की इच्छा और कुछ प्राप्त करने की लालसा होगी, वह अवश्य विजयी होगा।''

माँ की बात सुनकर हार्दिक ने कहा– ''वाह माँ! आपने बहुत अच्छी कहानी मुझे सुनाई है। मैं जीवन में कभी हार नहीं मानूँगा, लगातार प्रयत्न करता रहूँगा।''

हार्दिक की यह बात सुनकर माँ के चेहरे पर मुस्कान आ गई थी।

**– जयपुर (राजस्थान)**

कविता

# महावीर स्वामी

**– डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'**

जय हो आपकी महावीर स्वामी।
अहिंसा का पाठ पढ़ाया,
इस जगत को जीना सिखलाया,
अपरिग्रह का देखा सपना,
सच में तुम हो अन्तर्यामी।
जय हो आपकी महावीर स्वामी।
राजपाट तो सारा छोड़ा,
मोह माया से नाता तोड़ा,
बड़े प्रेम से भारत भूमि पर,
सत्य कर्म पतवार थामी।
जय हो आपकी महावीर स्वामी।
आज वही फिर आपा–धापी,
भाग–दौड़ से धरती नापी,
आओ अपनी सीख सिखाओ,
फिर भारत में हिंसा व्यापी।
जय हो आपकी महावीर स्वामी।
निर्वाण दिवस पर करें प्रणाम,
करें बताएँ आपके काम,

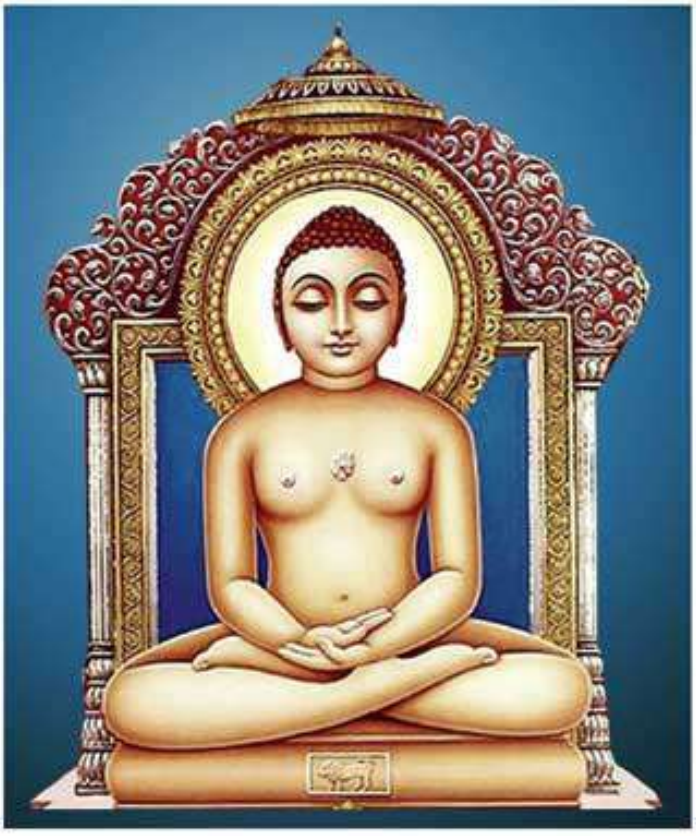

नाम करें सभी संसार में,
भारत भूमि बनें फिर नामी।
जय हो आपकी महावीर स्वामी।

**– भीलवाड़ा (राजस्थान)**

# देवों के वैद्य धन्वन्तरि

– शिवचरण चौहान

कहते हैं धन्वन्तरि देवों के वैद्य हैं। अमृत के लिए जब देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया था तो कार्तिक कृष्ण पक्ष की द्वादशी को कामधेनु गाय और त्रयोदशी को भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लिए हुए निकले थे।

धन्वन्तरि को भगवान विष्णु का अवतार भी माना गया है। चार भुजाधारी धन्वन्तरि एक हाथ में चक्र, एक हाथ में शंख, एक हाथ में अमृत कलश एक हाथ में औषधि लिए हुए थे।

हिंदुओं के प्राचीन ग्रंथ वेद और पुराणों में धन्वन्तरि की कथा आती है। कहते हैं ब्रह्मा जी ने १०,०००० श्लोकों से आयुर्वेद नामक ग्रंथ की रचना की थी। बाद में ब्रह्मा जी ने आयुर्वेद का ज्ञान दक्ष प्रजापति को कराया।

अश्विनी कुमार वेद कालीन वैद्य हैं। कहते हैं जब भगवान शिव ने दक्ष प्रजापति का शीश काट दिया था तब अश्विनी कुमार उन्हें चिकित्सा करके दक्ष प्रजापति के सिर में बकरे का सिर जोड़ दिया था।

आयुर्वेद का ज्ञान देवराज इंद्र को भी था। कैसे हैं मनुष्यों की भलाई के लिए और उनके रोगों का उपचार करने के लिए काशी नरेश दिवोदास के रूप में धन्वन्तरि ने अवतार लिया था।

दिवोदास ने ऋषि भारद्वाज जी से आयुर्वेद की शिक्षा ली थी।

और अष्टांग आयुर्वेद की रचना की। दिवोदास से ही ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत ने आयुर्वेद का ज्ञान शिष्य बनकर प्राप्त किया था।

ऋषि सुश्रुत ही पहले शल्य चिकित्सक थे। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के बारे में विस्तार से बताया गया। बाद में चरक ने चरक संहिता लिखी। प्राचीनकाल में मुनि लोग ऋषि भी थे और रोगों के उपचार के लिए जड़ी बूटियों का अनुसंधान करते रहते थे। अगस्त्य और अत्रि भी कुशल चिकित्सक थे। अथर्ववेद में आयुर्वेद की जानकारी मिलती है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी दीपावली से दो दिन पूर्व पड़ती है। त्रयोदशी को ही भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश और औषधि लेकर समुद्र में प्रकट हुए थे इसलिए त्रयोदशी को धन्वन्तरि जयंती मनाई जाती है। भगवान धन्वन्तरि जिस कलश में अमृत लेकर प्रकट हुए थे वह कलश स्वर्ण का था। इसलिए धन्वन्तरि जयंती पर स्वर्ण की वस्तु को खरीदना शुभ माना जाता है।

आज भी हमारे वैद्य और चिकित्सक धन्वन्तरि जयंती पर भगवान धन्वन्तरि की पूजा करते हैं। आमजन धन्वन्तरि इसलिए पूजा करते हैं ताकि वह जीवनभर निरोगी बने रहे।

पहला सुख निरोगी काया। आरोग्यता को सबसे बड़ा सुख माना गया है। इसलिए धन से पहले आरोग्य सुख मांगने की परंपरा हमारे दीप पर्व में समाहित है।

वैद्य धन्वन्तरि ने आयुर्वेद की रचना कर हमें एक अमूल्य उपहार दिया है। हमारे पास दुनिया में सबसे पहले शल्य चिकित्सा थी। शल्य चिकित्सा विज्ञान में जो जो उपकरण बताए गए हैं उनके ही परिष्कृत रूप आज डॉक्टरों के पास दिखाई देते हैं।

धन्वन्तरि जयंती पर भगवान धन्वन्तरि की पूजा अवश्य करें और उन्हें श्रद्धा से स्मरण करें कि आपको जीवन भर निरोग रखें।

– कानपुर देहात (उ. प्र.)

# खिलौनों में लक्ष्मी पूजा

– बनवारी लाल ऊमर वैश्य

खिलौनों की कहानी वेद और पुराणों से जुड़ी हुई है। सभ्यता के विकास के साथ इसका इतिहास शुरु होता है। सिन्धुघाटी की खुदाई में दीपलक्ष्मी की मूर्ति मिली थी और हाथी–घोड़े के साथ रथ के खिलौने। ये मिट्टी के बने हुए थे जो आज भी गाँवों में लक्ष्मी, हाथी, घोड़े, रथ पालकी आदि के खिलौने मिट्टी से बनाए जाते हैं और उन पर लाल, पीले, हरे, नीले, गुलाबी आदि के रंग चढ़ाए जाते हैं।

बच्चे दीपावली पर इन्हीं खिलौने से लक्ष्मी पूजा कर लेते हैं। इन खिलौने के पीछे इतिहास है जिसने बालकों को अपनी संस्कृति और परम्परा की जानकारी होती है। प्राचीन भारत इन खिलौने को विदेश के बाजारों में भेजता था जिनसे देश में लक्ष्मी के रूप में सोना आता था। खिलौने के विदेशी व्यापार में भारत आगे था। विदेशी भारतीय सभ्यता, संस्कृति और कला से परिचित होते थे। मृदा और कुलाल विज्ञान आगे था।

## हाथी–घोड़ा पालकी

आज भी बच्चे दीपावली पर्व पर खेल–खेल में गाया करते हैं 'हाथी–घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की'। जब समुद्र से लक्ष्मी निकली थी तब उनके साथ ऐरावत हाथी और उच्चैश्रवा घोड़ा भी था। वैदिक लक्ष्मी इन्हीं घोड़े–हाथी और रथ के बीच होकर चलती थी। यूनान की लक्ष्मी नाइट का मुख घोड़े का है और शेष भाग परी का है। समुद्र से लक्ष्मी के साथ अप्सरा भी आई थी जो जल परी थी। इनकी स्मृति में इनके खिलौने बनाए जाते हैं। हाथी को गज लक्ष्मी का दर्जा मिला है। पालकी में बैठकर गृह लक्ष्मी बिदा होती है। खिलौने में रथ के साथ पालकी भी है।

## दीप लक्ष्मी

खिलौने में लक्ष्मी के हाथ में दीये होते हैं। उन्हें ज्योति की देवी कहा जाता है जो बालकों को संदेश देती हैं 'हम अँधेरे से उजाले की ओर बढ़े'। देश की सभ्यता की ज्योति जब यूरोप में पहुँची थी तब बाइबिल भी बोल उठी थी– ''हमें ज्ञान की ज्योति भारत से मिली थी। (लाइट कैम फ्राम दी ईस्ट)।''

## उल्लू

लक्ष्मी का वाहन उल्लू है। लक्ष्मी पूजा के दिन उल्लू वाहिनी लक्ष्मी के खिलौने खूब बिकते हैं। बंगाल

में बच्चे लक्ष्मी को **लक्खी माँ** कहते हैं। यूनान की लक्ष्मी एथेना भी उल्लू पर सवार होती है। एथेना के खिलौने के संग यूनानी बालक खूब झूमते हैं। दोनों देशों में उल्लू के खिलौने बिकते हैं। बांग्लादेश में उल्लू दर्शन शुभ माना जाता है। उसके अभाव में खिलौने का दर्शन होता है।

## कमल

लाल कमल लक्ष्मी का रूप है। इसके खिलौने घरो में खूब शोभा पाते हैं। ऐसे खिलौने को रूपश्री कहते हैं। खिलौने में लक्ष्मी को कमल पर बैठी हुई दिखाई जाती है। बेल और नारियल पेड़ों के खिलौने में लक्ष्मी निवास करती है। रोम में जैतून वृक्ष के खिलौने के साथ बालिकाएँ खूब खेलती हैं। इसमें ज्ञान लक्ष्मी 'मिनर्वा' का वास होता है। इस प्रकार कमल, बेल नारियल और जैतून के खिलौने लक्ष्मी के प्रतीक हैं।

## मयूर

यूनान और इटली में मयूर के खिलौने बच्चे पसन्द करते हैं क्योंकि हरियाली और पर्यावरण की

लक्ष्मी जूनो का वाहन मयूर है। जूनो को हेटा भी कहते हैं। इनके साथ देवता जुपिटर के खिलौने बिकते हैं। इन खिलौनों से बच्चों को अपनी देवी और देवता की महिमा के विषय में जानकारी मिलती है।

## गृहलक्ष्मी

गृहलक्ष्मी के खिलौने थाली, चकरी, चूल्हे, बेलन, घड़ा चौकी आदि मिट्टी से बनाये जाते हैं। घण्टी, शंख, नगाड़ा आदि के भी खिलौने के साथ बच्चे अपना पर्व मनाते हैं। तोता प्रेम की लक्ष्मी का सूचक है। ये खिलौने लक्ष्मी के धरोहर होते हैं। बच्चे इनके द्वारा देश की आत्मा की पहचान पाते हैं। ये खिलौने देश की शिल्पकला और संस्कृति के इतिहास है।

ऐतिहासिक खण्डहरों में अनेक कलात्मक खिलौने दबे पड़े हैं। उनकी खोज से नई सूचना मिलेगी। खिलौना शब्द खेल से बना है। जिसका अर्थ होता है खिलौने द्वारा वीरों, भक्तों और महान लोगों को स्मरण करना। मिट्टी के खिलौने के अतिरिक्त अब लकड़ी, पीतल, लोहे और कांसे के खिलौने बनते हैं। ये बच्चों के मनोरंजन और ज्ञान–विज्ञान के साधन हैं।

समुद्र मंथन से निकली चौदह रत्न श्री देवी लक्ष्मी के सहचर हैं। हाँ, खिलौने में लक्ष्मी पूजा की परम्परा आज भी देश में जीवित है। ये पूजा पर्व स्वर्णिम भारत के अतीत को जीवित कर देते हैं।

**– मीरजापुर (उ. प्र.)**

# पौधों की दीपावली

– संदीप पाण्डे 'शिष्य'

मीनू एक वर्ष से अपने शहर से बाहर पढ़ाई कर रही थी उसको पिछले कुछ दिनों से दीपावली की प्रतीक्षा थी। उसके घर से हास्टल दो घंटे की दूरी पर था किन्तु उसका मन करता था कि पंख लगाकर उड़ जाये और अपने परिवार के पास आ जाये।

दीपावली के तीन दिन पहले वह बस से रवाना हो गई थी। सारे रास्ते वह बस अपने परिवार को यही याद कर रही थी। उसको यह विचार ही नहीं था कि बस में कितनी सवारियाँ चढ़ीं, धूम्रपान करने वालों को कंडक्टर ने कितना दण्ड लगाया आदि, आदि। किन्तु जब वह बस से उतरी तो उसने बस स्टेंड पर पेड़ देखा। एक पेड़ के चारों ओर सजावट थी रंगीन फूलों की माला लिपटी हुई थी। नीचे किसी ने दीपक रखने की जगह बना रथी थी। ना जाने यह देखकर मीनू को किस बात की याद आई कि वह अपनी नम आँखों को रूमाल से पोंछने लगी।

तभी मीनू ने मस्तिष्क पर जोर लगाया और उसको याद आ गया कि जब वह बारहवीं में पढ़ रही थी तब उसके पिताजी ने नया घर बनवाया था। बरामदे में बहुत सुंदर से गमले लगा दिये थे। घर पर सब लोग उन गमलों में उग रहे पौधों से प्रेम करते साथ ही माली आते और पौधों की निराई–गुड़ाई कर जाते थे। उसे याद आया कि काका हर पौधे से बात करते रहते थे और इस तरह बतियाते कि मीनू को हँसी आ जाती थी।

वह कहते– ''उनसे सुन मेरे भाई और कैसे हालचाल है।'' माली काका कभी थकते भी नहीं थे मीनू को लगता कि हो न हो इसका राज इनकी मजेदार बातों यानि गपशप में ही कहीं छिपा है। एक दिन मीनू ने माली काका से पूछा कि– ''माली काका! आप इनसे बातचीत करते हो?'' तो इसका उत्तर देने से पहले माली काका ने उसको बैंगन के दो पौधे रोपने को दे दिये मीनू को बहुत आनन्द आया उसने गीली माटी से लबालब गमले में एक पौधे को रोप दिया फिर सारी मिट्टी बराबर कर दी वैसा ही दूसरे गमले के साथ किया।

अब मीनू ने बगैर देरी किये अपनी वही बात दोहराई और कहा– ''माली काका! माली काका! पहले एक बात तो बताओ ना उन सब पौधों से आप बातें करते हो पर कैसे?''

माली काका ने कहा–''बेटी! यह सब प्रेम की भाषा जानते हैं एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हुए हैं जगदीश चंद्र बसु वे कहते थे कि पौधे सब अनुभव करते हैं जो हम इंसान अनुभव कर सकते हैं। इस पर उन्होंने प्रमाण भी दिये हैं।''

''हाँ जी माली काका! यह तो मैंने सातवीं कक्षा में विज्ञान की पुस्तक में पढ़ा है।''

''बहुत अच्छा बेटी! तो चलो अब सर्दी में यह सब्जी देंगे ना तो इस दीपावली यहाँ पर एक दीपक इन पौधों के पास रखो यह तुमको अपना फल यानि ताजा ताजा बैंगन देंगे। एक बैंगन का पेड़ कम से कम दस वर्ष तक फल देता रहेगा।''

''अरे! सच काका?'' ''हाँ हाँ हो सकता है कि बारह वर्ष भी।'' ''तो मीनू बेटी ना तो तुम इनसे भी एक उजाले का बंधन जोड़ लो।

''अच्छा अच्छा, अवश्य अवश्य।'' कहकर मीनू ने वहाँ चार मुँह का दीपक रख दिया। न जाने ऐसा क्या अनुभव हुआ कि वह बैंगन के पौधों को हाथ लगाती तो लगता वह ''हँस हँस कर कह रहे हैं मीनू कैसी हो?''

अब धीरे-धीरे मीनू को उन पौधों से विशेष लगाव हो गया। किन्तु बारहवीं के बाद से वह बाहर थी। आज हर एक मिनट बाद उसको पौधे याद आ रहे थे। उसको सब याद आ रहा था माली काका कहते थे 'यह पेड़ हमें भाई जैसी सुरक्षा देते हैं और अपनी पूरी जिंदगी हमें दे देते हैं। कोई ऋतु हो फल, फूल, पत्ती, तना, छाल सब चीजें अपने अंगों से तोड़कर, छीलकर ले जाने वाले को कुछ भी नहीं कहते।' माली काका की इस बात पर वह हमेशा ही सहमत होती थी। इस पेड़ पर दीपावली मनाने का किसी का सपना देख उसे सब याद आने लगा। घर पर आई और सारा परिवार प्रसन्न था। और मीनू की बहुत सेवा हो रही थी किन्तु मीनू का मन कहीं खो गया था।

जब सबने जोर देकर कारण पूछा तो मीनू ने बता दिया कि ''माँ! घर पहुँची तो बहुत विचित्र लगा। माँ! बरामदे से गमले हटा दिये? मुझे अपने बैंगन के पौधों की रह रहकर याद आ रही है।''

माँ तुरन्त बोली- ''अरे! दीपावली की रंगाई-पुताई के कारण। पर मीनू मुझे अच्छा लगा तुमको पौधों से प्यार। अब सुन शाबाश! जरा छत पर जाना और उन सभी पौधों को भी सजाकर आना वहाँ भी रात को तीन दीपक लगाना सबको प्रकाशित करना उनको भी जो बैंगन के नहीं हैं।''

''छत पर हैं अरे! माँ सच?'' ''हाँ हाँ पर दूसरे बड़े गमले में लगा दिये हैं।'' माँ की बात सुनकर मीनू उछल पड़ी। वह अपने भाई राजू के साथ अपने और भाइयों को बहुत ही लेकर बहुत ही प्रसन्नता के साथ छत पर चली आई थी। छत पर कम से कम सौ गमले रखे थे। बैंगन, मिर्ची, नींबू, अनार वाह माँ मीनू तो उछल पड़ी, अब माँ ने कहा कि मीनू बरामदे में एक दिन बंदरों का समूह आ गया और गमले तोड़ दिये बरामदा बहुत छोटा था बस दस गमले ही आ सकते थे। माली काका ने छत पर बोगनबेलिया की बाड़ लगा दी और इतने गमले लगा दिये। अब यहाँ बंदर आ सकते हैं पर नुकसान नहीं कर सकते बोगनबेलिया के डर से वे दूर से ही भाग जाते हैं।''

मीनू को यह सब सुनकर बहुत आनंद आ रहा था। वहाँ होस्टल में भी उसने पौधा लगा रखा था। मीनू को आज रात को दीपक की यह थाली सजाने में बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। रंग-बिरंगी जगमगाते दीपक की थाली दूर से और भी इंद्रधनुषी हो रही थी।

जब वह और उसके भाई छत पर दीपक लगाकर पौधों को प्यार देकर आनंद मनाकर वापस लौटने लगे तो लगा कि रोशनी और हवा भी बैंगन के पौधे पर गा रही थी। माँ कहा- ''मीनू हमारी छत पर जगमगाती दीपक की मण्डली। यह दीपावली तो संगीतमय हो गई।'' मीनू की आँखें फिर भर आईं। आज उसने हमेशा याद रहने वाली दीपावली मना ली थी।

**- कोटरा अजमेर(राजस्थान)**

# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का निराला बाल साहित्य

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

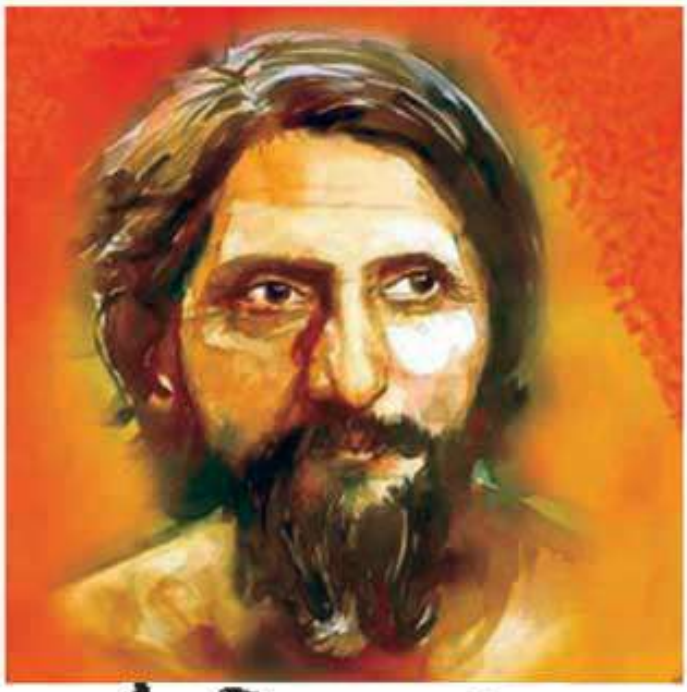

प्यारे बच्चो,

छायावाद के प्रमुख स्तम्भ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी को भला कौन नहीं जानता। उपन्यास, कहानी, काव्य, निबंध हर विधा में उन्होंने अप्रतिम सृजन किया। यही नहीं, उन्होंने उच्च कोटि का बाल साहित्य भी अत्यंत समर्पित भाव से लिखा। उनके बाल साहित्य में बाल–गोपालों को उत्तम चरित्र प्रदान करने के लिए नैतिक मूल्यों से जोड़ने की सशक्त ललक और झलक देखी जा सकती है।

उनका जन्म २१ फरवरी १८९६ को महिषादल जिला मेदनीपुर (पश्मिच बंगाल) में पंडित राम सहाय त्रिपाठी और रुक्मिणी देवी के पुत्र के रूप में हुआ था। इस तिथि को रविवार था। अत: इनका नाम सूर्यकुमार रखा गया। पढ़ाई से अधिक उनका मन खेलने, घूमने, तैराकी और कुश्ती लड़ने में लगता था। उन्होंने स्वयंपाठी छात्र के रूप में बंगला, संस्कृत, अँग्रेजी साहित्य का खूब अध्ययन किया। निराला जी के पिता जी मूलरूप से उत्तरप्रदेश के उन्नाव जनपद के गढ़ाकोला गाँव के निवासी थे। माँ, पिता, पत्नी मनोहारी और फिर पुत्री सरोज का देहांत उनके मन में विषाद भर गया। उनका सारा जीवन संघर्षमय रहा किन्तु उन्होंने कभी भी दीनता का परिचय नहीं दिया। निराला जी ने अपना आगे का जीवन लखनऊ और प्रयाग में बिताया। प्रयाग में ही १५ अक्टूबर १९६१ को उनका निधन हुआ।

निराला जी की पहली कविता 'जन्मभूमि' प्रभा मासिक के जून १९२० अंक में प्रकाशित हुई। उन्होंने 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। सरोज स्मृति और राम की शक्ति पूजा उनकी अमर कृतियाँ हैं। 'वर दे वीणा वादिनी' उनकी लोकप्रिय सरस्वती वंदना है जिसे छात्र विशेष रूप से पसंद करते हैं। उनका सारा साहित्य निराला रचनावली के आठ खंडों में संकलित है। निराला रचनावली का सातवाँ खंड उनके बाल साहित्य पर केन्द्रित है।

निराला जी ने बच्चो के लिए पाँच पुस्तकें लिखीं– भक्त ध्रुव (१९२६), भीष्म (१९२६), भक्त प्रह्लाद (१९२६), महाराणा प्रताप (१९२७) और सीख भरी कहानियाँ।

ईसप की नीति कथाओं पर आधारित 'सीख भरी कहानियाँ' पुस्तक उन्होंने १९४३ में लिखी किन्तु दुर्भाग्यवश इसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के उपरांत हो सका। इसे रामेश्वर प्रसाद मेहरोत्रा ने १९६९ में अभिनव भारती प्रकाशन, प्रयाग से प्रकाशित किया था। पुस्तक की भूमिका में निराला जी कहते हैं– ''इन कथाओं को सुनाने का ढंग केवल मेरा है, बाकी सब कुछ हमारे पूर्वजों का है। नन्हें–मुन्ने इन कहानियों में जितना अधिक रस पाएँगे

उतना ही मेरी कहानीगोई की सफलता होगी।''

नि:संदेह उनकी बात कहानियाँ गागर में सागर जैसी हैं। आकार में लघु किन्तु महत्व की दृष्टि से अत्यंत विशाल। हर कहानी एक सीख के साथ समाप्त होती है। आइए, पढ़ते हैं उनकी कुछ अविस्मरणीय रचनाएँ–

## भेड़िया भेड़िया

एक चरवाहा लड़का गाँव के जरा दूर पहाड़ी पर भेड़ें ले जाया करता था। उसने गाँव वालों से मजाक करने की सोची। दौड़ता हुआ गाँव के अंदर आया और चिल्लाया, ''भेड़िया, भेड़िया। मेरी भेड़ों को भेड़िया ले जा रहा है।''

गाँव की जनता टूट पड़ी। भेड़िया खदेड़ने के हथियार ले लिये लेकिन उनके दौड़ने और व्यर्थ हाथ–पैर मारने की चुटकी लेता हुआ चरवाहा लड़का आँखों में मुस्कराता रहा। समय–समय पर कई बार उसने यह हरकत की। लोग धोखा खाकर उतरे चेहरे से लौट आते थे। एक दिन सही में भेड़िया आ गया और एक के बाद दूसरी भेड़ तोड़ने (पकड़ने) लगा। डरा हुआ चरवाहा गाँव आया और भेड़िया भेड़िया चिल्लाया।

गाँव के लोगों ने कहा– ''अबकी बार चकमा नहीं चलने का। चिल्लाता रहा।'' लड़के की चिल्लाहट की ओर उन लोगों ने ध्यान नहीं दिया। भेड़िये ने उसके दल की सारी भेड़ें मार डाली, एक को भी जीता नहीं छोड़ा।

इस कहानी से यह सीख मिलती है कि **जो झूठ बोलने का आदी है, उसके सच बोलने पर भी लोग कभी विश्वास नहीं करते।**

## दो घड़े

एक घड़ा मिट्टी का बना था, दूसरा पीतल का। दोनों नदी के किनारे रखे थे नदी में बाढ़ आ गई, बहाव में दोनों घड़े बह चले। बहुत समय मिट्टी के घड़े

चाहा। पीतल वाले घड़े ने कहा– ''तुम डरो नहीं मित्र, मैं तुम्हें धक्के न लगाऊँगा।''

मिट्टी वाले ने उत्तर दिया– ''तुम जान-बूझकर मुझे धक्के न लगाओगे, सही है, किन्तु बहाव के कारण से हम दोनों अवश्य टकराएँगे। यदि ऐसा हुआ तो तुम्हारे बचाने पर भी मैं तुम्हारे धक्कों से न बच सकूँगा और मेरे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे। इसलिए अच्छा है कि हम दोनों अलग-अलग रहें।''

जिससे तुम्हारा नुकसान हो रहा हो, उससे अलग ही रहना अच्छा हैं, चाहे वह उस समय के लिए तुम्हारा मित्र भी क्यों न हो।

## कंजूस और सोना

एक आदमी था, जिसके पास काफी जमींदारी थी, किन्तु दुनिया की किसी दूसरी चीज से सोने की उसे अधिक चाह थी। इसलिए पास जितनी जमीन थी, कुल उसने बेच डाली और उसे कई सोने के टुकड़ों में बदला। सोने के इन टुकड़ों को गलाकर उसने बड़ा गोला बनाया और उसे बड़ी सावधानी से जमीन में गाड़ दिया। उस गोले की उसे जितनी परवाह थी, उतनी न पत्नी की थी न बच्चे की न स्वयं अपनी जान की। हर सुबह वह उस गोले को देखने के लिए जाता था और यह ज्ञात करने के लिए कि किसी ने उसमें हाथ नहीं लगाया। वह देर तक नजर गड़ाए उसे देखा करता था।

कंजूस की इस आदत पर एक दूसरे की निगाह गई। जिस जगह वह सोना गड़ा था, धीरे-धीरे वह ढूँढ़ निकाला गया। एक रात किसी ने वह सोना निकाल लिया। दूसरे दिन सुबह को कंजूस अपनी आदत के अनुसार सोना देखने के लिए गया, किन्तु जब उसे वह गोला दिखाई न पड़ा, तब वह दुःख और क्रोध में आपे से बाहर हो गया।

उसके एक पड़ोसी ने उससे पूछा– ''इतना मन क्यों मारे हुए हो? असल में तुम्हारे पास कोई पूँजी नहीं थी फिर कैसे वह तुम्हारे हाथ से चली गई? तुम केवल एक शौक ताजा किए हुए थे कि तुम्हारे पास पूँजी थी। तुम अब भी ख्याल में लिये रह सकते हो कि वह धन तुम्हारे पास है। सोने के उस पीले गोले की जगह उतना ही बड़ा पत्थर का एक टुकड़ा रख दो और सोचते रहो कि वह गोला अब भी है। पत्थर का वह टुकड़ा तुम्हारे लिए सोने का गोला ही होगा, क्योंकि उस सोने से तुमने सोने वाला काम नहीं लिया। अब तक वह गोला तुम्हारे काम नहीं आया। उससे आँखें सेंकने के सिवा काम लेने की कभी तुमने सोची ही नहीं।''

**यदि आदमी धन का सदुपयोग न करे, तो उस धन की कोई कीमत नहीं।**

## गधा और मेंढक

एक गधा लकड़ी का भारी बोझ लिये जा रहा था। वह एक दलदल में गिर गया। वहाँ मेंढकों के बीच जा गिरा। रेंकता और चिल्लाता हुआ वह इस तरह साँसें भरने लगा, जैसे दूसरे ही क्षण मर जाएगा।

आखिर एक मेंढक ने कहा– ''दोस्त! जब से तुम इस दलदल में गिरे, ऐसा ढोंग क्यों रच रहे हो? मैं हैरत में हूँ, जब से हम यहाँ हैं, अगर तब से तुम होते तो न जाने क्या करते?''

**हर बात को जहाँ तक हो, सँवारना चाहिए। हमसे भी बुरी हालत वाले दुनिया में हैं।**

## समझदार चिड़िया

एक चिड़िया के कुछ बच्चे एक पके खेत के घोंसले में रहते थे। एक दिन सुबह बच्चों की माँ ने कहा– ''प्यारे बच्चो! खेत काटने का समय बहुत निकट है। किसान बहुत जल्द खेत काटने के लिए आएगा। उस समय हमें रहने के लिए नये स्थान की खोज करनी होगी। अब तुम जो कुछ देखो और सुनो, शाम को जब मैं वापस आऊँ, मुझे बताते रहना।''

यह कहकर वह भोजन की तलाश में उड़ गई।

उसी शाम को जब वह अपने घोंसले में लौटी, तो बच्चों को बहुत चंचल पाया। उन्होंने कहा– ''माँ!

इस स्थान से हमें शीघ्र ले चलो। आज किसान अपने एक लड़के के साथ खेत देखने आया था। हमने उसे कहते हुए सुना, फसल काटने लायक हो गया है। कल अपने पड़ोसियों को फसल काटने के लिये बुला लो।''

बच्चों की माँ मुस्कराई और कहा– ''अभी कोई खतरा नहीं है। कल फिर हाल मालूम करो और रात को मुझे बतलाओ।''

दूसरे दिन जब रात हुई, बच्चे डरे हुए अपनी माँ से मिले, ''हमें कल यहाँ से अवश्य चले जाना चाहिए, क्योंकि वह किसान आया था। उसने अपने लड़के से कहा, यह फसल अवश्य जल्दी ही काट लेनी चाहिए। यदि हमारे पड़ोसी इस काम के लिए नहीं पहुँचे, तो हमें रिश्तेदारों को बुलाना होगा। जाओ अपने चाचा और चचेरे भाइयों से कहो कि कल यह फसल काटने के लिए आ जाए।''

यह हाल सुन कर माँ ने कहा– ''प्यारे बच्चो! घबराओ नहीं। किसान के रिश्तेदार पहले अपनी फसल काटेंगे। किन्तु ध्यान रखो कि कल फिर मुझे सारा हाल ज्ञात हो जाए।''

तीसरे दिन वह फिर बाहर निकली। जब रात को लौटी, बच्चों ने चिल्लाकर कहा, ''माँ–माँ! उस किसान ने कहा है कि कल वह स्वयं फसल काटेगा, अब वह पड़ोसियों या रिश्तेदारों की राह न देखेगा। फसल बिलकुल पककर झुक गई है।''

यह सुनकर बच्चों की माँ ने कहा– ''मेरे बच्चों, तैयार हो जाओ। हमें अब देर नहीं करनी चाहिए और चल देना चाहिए। **यदि दूसरे के सुपुर्द काम छोड़ दिया जाता है तो वह कभी नहीं होता। किन्तु जब आदमी स्वयं काम करने पर आमादा हो जाता है तब वह जल्द से जल्द पूरा होता है।**''

**– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)**

कविता

# झाड़ू जादूगरनी

**– पद्मा चौगांवकर**

**ऐ झाड़ू जादूगरनी!**
**अजब गजब तेरी करनी।**
**जब चलती, पल में करती,**
**झाड़–झटककर साफ–सफाई,**
**धूल, गंदगी, कीटक जाले,**
**कहीं नहीं अब रुकने वाले।**
**चमका–चमका घर मेरा,**
**कोने–कोने जादू तेरा।**
**जहाँ चले नित तेरा फेरा,**
**वहाँ लगे खुशियों का डेरा।**
**बीमारी–बेकारी भागे,**
**सब लाचार हैं तेरे आगे।**
**दूर गंदगी, करती आप,**
**लेकिन, खुद रहती है साफ।**
**अजब–गजब तेरी करनी,**
**ऐ झाड़ू जादूगरनी!**

**– गंजबासौदा (म. प्र.)**

# रोशनी के किरदार

– डॉ. सेवा नन्दवाल

दीया, बाती, तेल और माचिस की तीली पास बैठे होने के बाद भी वातावरण में गर्माहट नहीं थी। संसार को प्रकाशित करने वाले उपादानों के बीच बर्फ–सी ठंडक व्याप्त थी। तीन किरदारों के चेहरों पर तो निर्विकार भाव थे किन्तु चौथी व्यक्तित्व, दूसरों की सुलझाने वाली, माचिस की तीली जैसे अंदर ही अंदर स्वयं सुलग रही थी। उसकी मुखमुद्रा कठोर, असहज हो चली थी। दीया, बाती और तेल ने उसे संज्ञान लिया। अपने साथी की खिन्नता उन्हें पचा नहीं पाई। उन्होंने उसकी उदासी का कारण जानना चाहा ताकि उसका प्रतिकार किया जा सके।

तीली अपने अंतरंग मित्रों की चिंता टाल नहीं सकी और अपनी पीड़ा बताने लगी– ''मेरी बात को अन्यथा मत लेना क्योंकि तुम तीनों मेरे अपने हो...।'' इतना कहते तीली झिझकते चुप हो गई। ''अपना मानती हो तो सकुचाओ मत, अपना दिल खोलकर उसे हल्का कर लो, हमें कुछ बुरा नहीं लगेगा।'' दीए ने आश्वस्त करते हुए प्रोत्साहित किया। ''मालूम है तुम्हारे इस उपकार के लिए में जीवनभर कृतज्ञ रहूँगा।'' दीए ने विनम्रतापूर्वक स्वीकारा।

''मेरी यही विनम्र शिकायत है कि लोग मेरे बलिदान को अनदेखा करते हुए तुम्हारी प्रशंसा के पुल बांधते अघाते नहीं। अंधेरे को परास्त करने का सारा श्रेय तुम्हें मिल जाता है और मैं स्वयं को ठगी तो अनुभव करती हूँ।'' तीली ने मन की व्यथा कही।

तीनों मित्र चकित हो तीली को ताकने लगे। ''दीए के साथ बाती, तेल को भी समुचित श्रेय मिल जाता है किन्तु मुझे कोई जूठे पत्ते में भी नहीं पूछता।'' तीली ने अपनी शिकायत पूरी की।

शिकायत सच्चाई समाहित और उचित थी। बातों ने समझाने का प्रयास किया– ''नहीं ऐसा नहीं तीली, मेरी बात सुनो। धार्मिक कार्यक्रमों में पूजा की थाली में दीए को प्रमुखता दी जाती है, बाती–तेल भी उसके साथ बने रहते हैं लेकिन मैं तो जलने के बाद कचरे के ढेर में फेंक दी जाती हूँ। सब मुझ अभागिन को भूल जाते हैं, मेरे भाग्य में केवल जलना लिखा है।'' अपने मन का बोझ हल्का करते तीली खिन्न हो गई।

''सिरमौर तो दीया बना रहता है, मैं और बाती तो बस ठसे रहते हैं।'' तेल ने सुर में सुर मिलाया।

इस चौतरफा अपनों के हमले को झेलते हुए दीया मुस्कराया फिर सांत्वना देने का प्रयत्न किया– ''जलना तुम्हारे भाग्य में नहीं मेरे भाग्य में लिखा है। तीली तो मुझे सुलगाकर पल भर में शांत हो जाती है।'' दीए ने अपना पक्ष रखा। ''गलत! तुम कहाँ जलते हो दीपक भाई! मैं तब तक जलती हूँ जब तक कि मेरा अस्तित्व खाक न हो जाए।'' बाती ने अपना पक्ष रखा।

''मैं कहूँ कि तुम भी सही नहीं तो... तुम सब

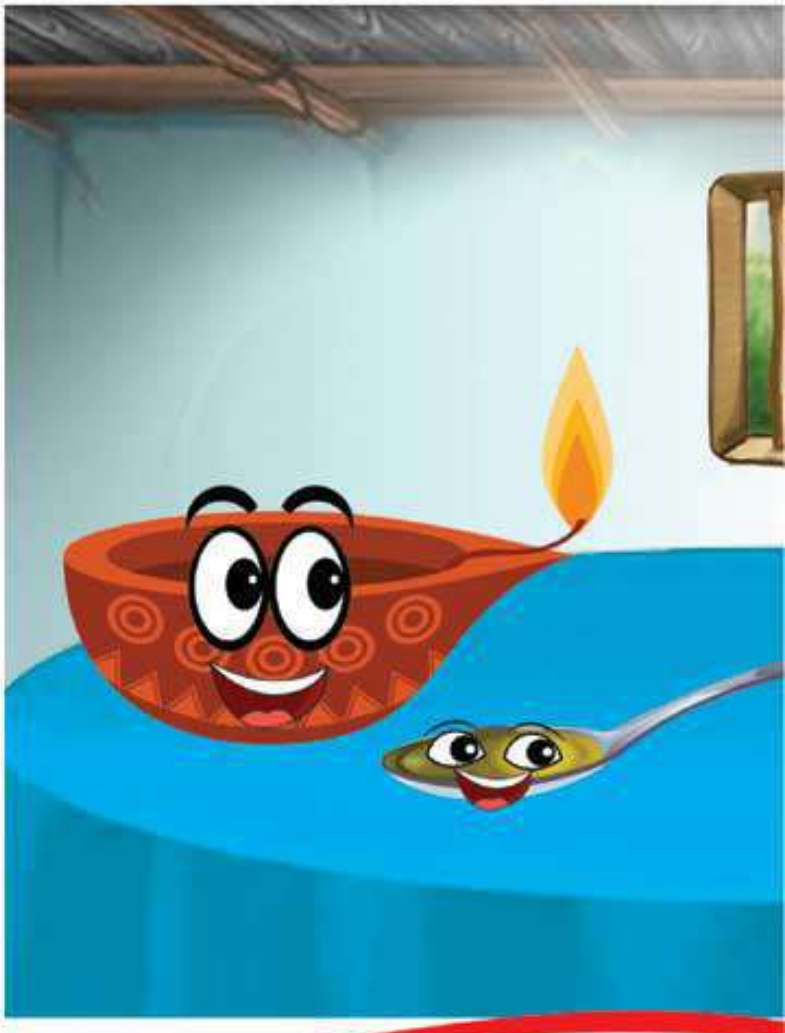

गफलत में हो। वास्तव में जलता और जलाता में हूँ। यदि दीए में नहीं डाला जाऊँ तो वह जलेगा कैसे?'' तेल ने अपना पक्ष रखा जो ठीक था।

दीए ने प्रतिवाद करते हुए सफाई परोसी– ''नहीं मैं सहमत नहीं, यह दुनिया मतलबी है, यहाँ जब जिसकी आवश्यकता होती है उसे स्मरण कर लिया जाता है। उसे ही भाव दिया जाता है। जैसे सूरज दादा के निकलने के बाद मुझ साधारण की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।'' बाती ने सहानुभूति दर्शायी– ''दीए भैया तुम सूरज का प्रतिरूप हो। उसका लघुरूप हो। विकल्प हो।''

''जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है तुम नींव हो बाती बहन! नींव हो फिर चाहे मुझे जलना हो। चूल्हा जलाना हो या अलाव। तुम्हारा काम तो पलक झपकते ही समाप्त हो जाता है।'' दीए ने कहा। ''सच पूछा जाए तो जलती हमेशा मैं हूँ। तुम तो बस मुझे आधार प्रदान करते हो। यह भी सत्य है कि तुम्हारे आधार के बिना मैं आधी अधूरी हूँ। हम दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।'' बाती ने गंभीर वाणी में सच्चाई का उल्लेख किया।

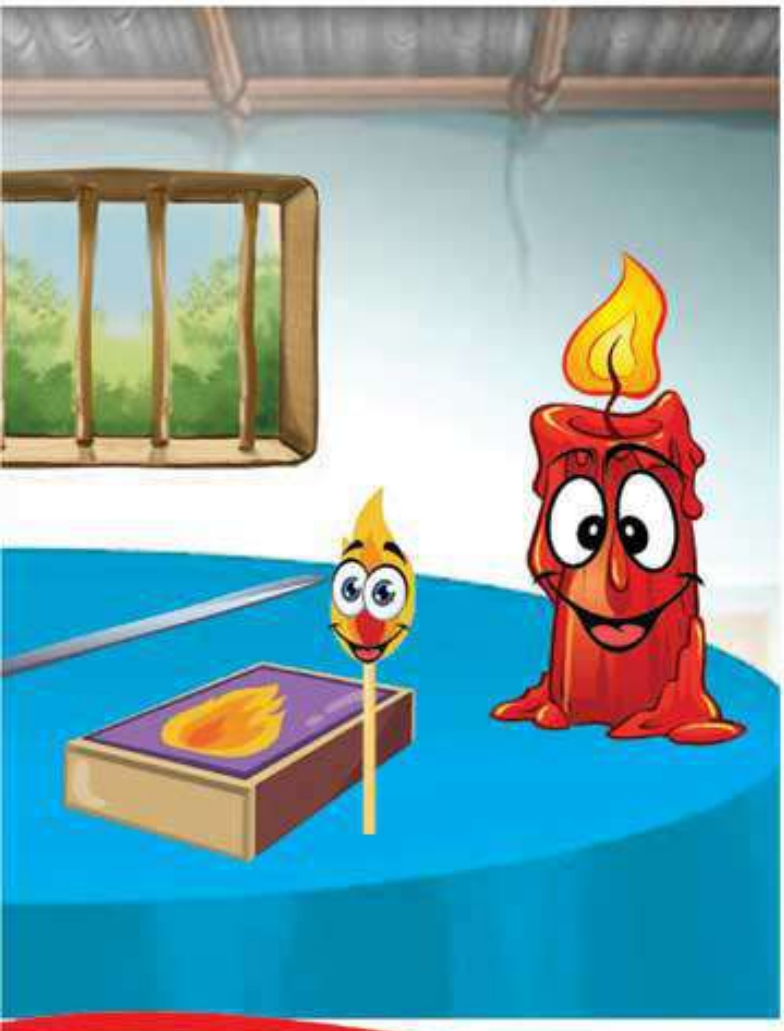

अब बारी थी तेल की। वह भला कैसे पीछे रहता। बोल पड़ा– ''ठीक है माना कि दिया तुम्हें आधार प्रदान करता है पर उसका वह आधार भी तो मेरा मोहताज है। मैं उसका प्राणाधार हूँ।''

तीली ने अपने पक्ष में कहा– ''ठीक है माना दीए में तेल है। बाती है... सब कुछ है लेकिन जब तक मैं पहल ना करूँ.... तुम मात्र दिखावे की चीज ही हो।''

''हाँ तीली बहन तुम्हारा महत्व कौन अस्वीकार रहा है। सच तो यह है कि तुम हमारी नींव हो और यह भी सत्य कि नींव के पत्थर को कोई याद नहीं करता। उसकी महत्ता पर्दे के पीछे छिप जाती है। नींव के ऊपर तनी इमारत की सब प्रशंसा करते हैं किन्तु उसकी नींव के पत्थरों को सब अनदेखा कर देते हैं लेकिन हम तुम्हारे बलिदान को प्रणाम करते हैं।''

दीए ने प्रणाम करते हुए भावुक शब्दों में कहा– ''अब मैं एक खरी बात करूँ, हम चारों प्रकाश के किरदार परस्पर पूरक हैं। जब तक हम परस्पर सहयोग करेंगे, जगत को प्रकाशित करते रहेंगे। हमें किसी से कोई खतरा नहीं किन्तु बिना आपसी सहयोग के हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।'' तेल ने सार निकाला। सभी ने सहमति में अपना मस्तक झुका दिया।

तभी प्रकाश के स्तंभकारों ने देखा एक झुग्गी वासी गरीब ने पास की दुकान से एक दीया खरीदा। कुछ बाती, एक माचिस की डिबिया और थोड़ा-सा तेल। जब तक वह अपनी झुग्गी में पहुँचता, वहाँ अँधेरा पहले ही पहुँचकर गहरा चुका था। किन्तु उस गरीब के पास अंधियारे से लड़ने, भगाने के हथियार उपस्थित थे। जैसे ही उस गरीब ने दिया जलाया, अंधेरे में डूबी झुग्गी प्रकाश में नहा गई। गरीब की आँखों में प्रसन्नता की ज्योति जलती देख दिया परिवार खिल-खिला उठा। उसकी पहल रंग ला चुकी थी।

**– इन्दौर (म. प्र.)**

# डोडा के वीर

– रजनीकांत शुक्ल

अचानक धाँय–धाँय कर चलने वाली गोलियों की आवाज ने रात के सन्नाटे को भंग कर दिया। गहरी नींद में सोने जा रहे लोग भड़भड़ाते हुए बिस्तर छोड़कर उठ खड़े हुए। इसके साथ ही सारा गाँव शोरगुल, चीख–पुकार के कोलाहल से भर गया।

यह जम्मू कश्मीर राज्य के डोडा जिले की ठाठरी तहसील का लेहोता गाँव था। जो जिला मुख्यालय डोडा से लगभग पचास किलोमीटर की दूरी पर था। सुनसान रात के सन्नाटे में अचानक होने वाली इस गोलीबारी की आवाजों ने पूरे गाँव में हड़कंप सा मचा दिया था।

वर्ष १९९९ के जुलाई महीने की वह उन्नीस तारीख थी। यह वह समय था जब जम्मू कश्मीर में आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था। अभी दो महीने पहले ही कारगिल की ऊँची पहाड़ियों पर पाकिस्तानी सेना ने पाँच हजार सैनिकों के साथ घुसपैठ करके अवैध रूप से कब्जा जमाया था। भारत सरकार ने इसके विरुद्ध सीमा पर 'ऑपरेशन विजय' अभियान चलाया और भारतीय सेना के शौर्य पराक्रम के दम पर तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चौदह जुलाई को सारी दुनिया के सामने 'ऑपरेशन विजय' की सफलता की घोषणा कर दी थी।

कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी फौज की कमर टूट चुकी थी। युद्ध में पराजय के बाद सारी दुनिया ने देखा कि किस तरह उन्हें भारतीय भूमि को खाली करने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

इधर उन्नीस जुलाई की उस रात को लेहोता गाँव में पाँच भाइयों के कुनबे को लगभग दर्जन भर आतंकवादियों ने घेर लिया। एक दूसरे से सटे घरों वाला पाँच भाइयों के परिवारों का यह कुटुंब ही उन आतंकवादियों के निशाने पर था। उस परिवार में लगभग बीस सदस्य थे।

हुआ यह था कि क्षेत्र में आतंकवादियों द्वारा की जाने वाली वारदातों से बचाव के लिए गाँव–गाँव में ग्राम रक्षा समितियाँ बनी हुईं थीं। इस परिवार के भी चार लोग उस समिति के सदस्य थे। यही कारण था कि वे लोग और उनका परिवार आतंकवादियों के सीधे निशाने पर आ गए थे।

उस समय रात के लगभग साढ़े नौ बजे थे। आतंकवादी पूरी तरह से स्वचालित हथियारों और हथगोलों से लैस थे। उन ग्रामवासियों पर यह उनका अचानक हमला हुआ था। हालांकि इसकी संभावना उन्हें हमेशा रहती थी। इसी कारण से उन्होंने इसकी तैयारी भी कर रखी थी।

इस सारे हँगामे में उनके घर का एक–एक सदस्य मोर्चे पर डटा हुआ था। जिसमें ग्यारह साल का सुनील कुमार और बारह वर्ष का मुकेश कुमार भी था।

उन्हें पता था कि आतंकवादी हावी हो गए तो वे परिवार के किसी सदस्य को जीवित नहीं छोड़ेंगे। गाँव और घर के सारे सदस्य मिलकर आतंकवादियों का सामना पूरी शक्ति से करने में लगे हुए थे। यहाँ तक कि रात साढ़े नौ बजे से शुरु हुआ यह सशस्त्र संघर्ष सारी रात चलता रहा और अगले दिन सुबह नौ बजे तक जारी रहा।

आतंकी गतिविधियों को रोकने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपना शिविर लगाया हुआ था लेकिन यह सी. आर. पी. एफ. का कैम्प गाँव से काफी दूरी पर था। उन तक सूचना पहुँचना और सहायता मिलना उस समय बहुत मुश्किल था। आतंकवादी भी पूरी तरह आर-पार की लड़ाई ठानकर रात शुरू होते ही आ गए थे। गाँव के लोगों के सामने उनसे मुकाबला करने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था। उन्हें अपनी और अपने परिवार के सदस्यों की जान बचानी थी तो इस हिसाब से उन्हें मुकाबला करना ही करना था।

दोनों ओर से रुक-रुककर लगातार जबाबी गोलियाँ चल रही थीं। ऐसा लग रहा था कि आतंकवादी स्वचालित हथियार और हथगोलों से पूरी तरह लैस थे। उन्होंने एक साथ उस स्थान पर आक्रमण कर दिया जहाँ से उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था। परिणाम यह हुआ कि घर के मुकाबला करने वाले बड़े लोग एक-एक करके मारे जाने लगे। लगातार चल रहे उस संघर्ष में आतंकवादियों का मुकाबला कर रहे सुनील के पिता और मुकेश के भाई सहित घर के अन्य लोग प्रमुख लोग उन आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गए।

ऐसे में बजाय डरकर रोने के सुनील ने अपने पिता की बन्दूक और मुकेश ने अपने भाई की रायफल उठा ली। अब वे बिना भय के मौत का डर भुलाकर आतंकवादियों से मुकाबला करने लगे। उन्होंने जब देखा कि आतंकवादी उसी जगह पर पलटकर वार करते हैं जहाँ से वे गोली चलाते थे। इसलिए अब उन्होंने जगह बदल-बदलकर आतंकवादियों पर गोली चलाना शुरू किया।

इससे आतंकवादियों को इनकी सही स्थिति का पता नहीं चल पा रहा था और उन्हें लगता कि कई लोग प्रतिरोध कर रहे हैं। इस तरह उन्होंने कई घंटों तक आतंकवादियों को इसी भीषण संघर्ष में उलझाए रखा। घर के लगभग सारे ही पुरुष आतंकवादियों से मुकाबला कर रहे थे। इसी बीच घर की दो महिलाएँ शकुन्तला और संतोष छोटे बच्चों को साथ लेकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कैम्प की ओर सूचना देने के लिए भाग निकली थीं।

अगले दिन सुबह नौ बजे तक लगभग तेरह घंटे आतंकवादियों के साथ यह भीषण मुकाबला चलता रहा। जब तक सूचना मिलने पर सहायता के लिए सी.

आर. पी. एफ. के जवानों की टुकड़ी वहाँ आई तब तक वे आतंकवादियों गाँव से भाग चुके थे। पूरा घर श्मशान जैसा बना हुआ था। खून से सने हुए परिवार के पंद्रह सदस्यों की लाशें घर में पड़ी हुईं थीं।

इस भयानक सशस्त्र संघर्ष में एक आतंकवादी भी मारा गया था। अनेक लोग घायल पड़े कराह रहे थे। मृतकों के भावों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया और उन घायलों को हस्पताल में उपचार के लिए पहुँचाया गया।

यह बहुत बड़ी दुर्घटना थी। जहाँ एक ही स्थान पर पन्द्रह लोगों को आतंकवादियों ने मार डाला था। पूरे देश में इस घटना को लेकर आक्रोश की लहर फैल गई। स्थान-स्थान पर आतंकी घटना को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया हुई। साथ ही सुनील कुमार और मुकेश कुमार की विपरीत परिस्थितियों में धैर्य न खोकर बहादुरी दिखाते हुए आतंकवादियों से मुकाबला करने के लिये उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

उन दोनों का नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। उन्हें वर्ष २००० के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया। वर्ष २००१ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर उन्हें देश की राजधानी नई दिल्ली आमंत्रित किया गया।

वहाँ उन्हें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार की कोटियों में से सर्वोच्च कोटि **'भरत पुरस्कार'** को देकर सम्मानित किया।

नन्हें मित्रो!

**कितनी बड़ी मुसीबत आए, नहीं झुकाते सर को,**
**करें भरोसा खुद पर, हावी होने दें ना, डर को।**
**भय निकले मन से जब तो, रखें नहीं कसर को,**
**गिने दाँत उनके वंशज, पूछें कब शेर बबर को।**

**- दिल्ली**

# छः अँगुल मुस्कान

गार्ड की नौकरी का पहला दिन, बाबू लाल तैयार हुआ, बंदूक निकाली, उसे पोंछा। फिर कंधे पर बंदूक लटका कर तेज आवाज में बोला- ''सुनती हो मैं ड्यूटी पर जा रहा हूँ।'' पत्नी उस कमरे में आयी। बाबू लाल को वहीं खड़े देख बोली- ''क्या हुआ?'' बाबू लाल बोला- ''कैसे जाऊँ दरवाजे पर पड़ौसी का कुत्ता खड़ा है।''

*****

जगत (अपने बेटे से)- ''बेटा! आज मैं तुम्हारे साथ घूमने नहीं जा सकता। कार्यालय प्रबंधक का एस. एम. एस. आया है कि कार्यालय में आज ओवर टाइम करने हेतु आना है।

बेटा- ''लेकिन पिताजी! मैंने आप के मोबाइल से 'मैसेज सेंडिंग फेल्ड' लिख कर भेज दिया है।

*****

शिक्षक- मोनू बताओ, सबसे अधिक वर्षा कहाँ होती है?

मोनू- जमीन पर।

*****

ज्योतिषी- तुम्हारा नाम बांके है।

बांके- जी!

ज्योतिषी- तुम्हारे दो लड़के हैं।

बांके- जी!

ज्योतिषी- तुमने अभी-अभी पाँच किलो गेहूँ और तीन किलो चीनी ली है।

बाँके- आश्चर्यजनक महात्मा जी, आप तो भगवान हैं।

ज्योतिषी- तुझसे कुंडली मांगी तुमने राशन कार्ड पकड़ा दिया।

# दोस्तों के बिना

चित्रकथा: देवांशु वत्स

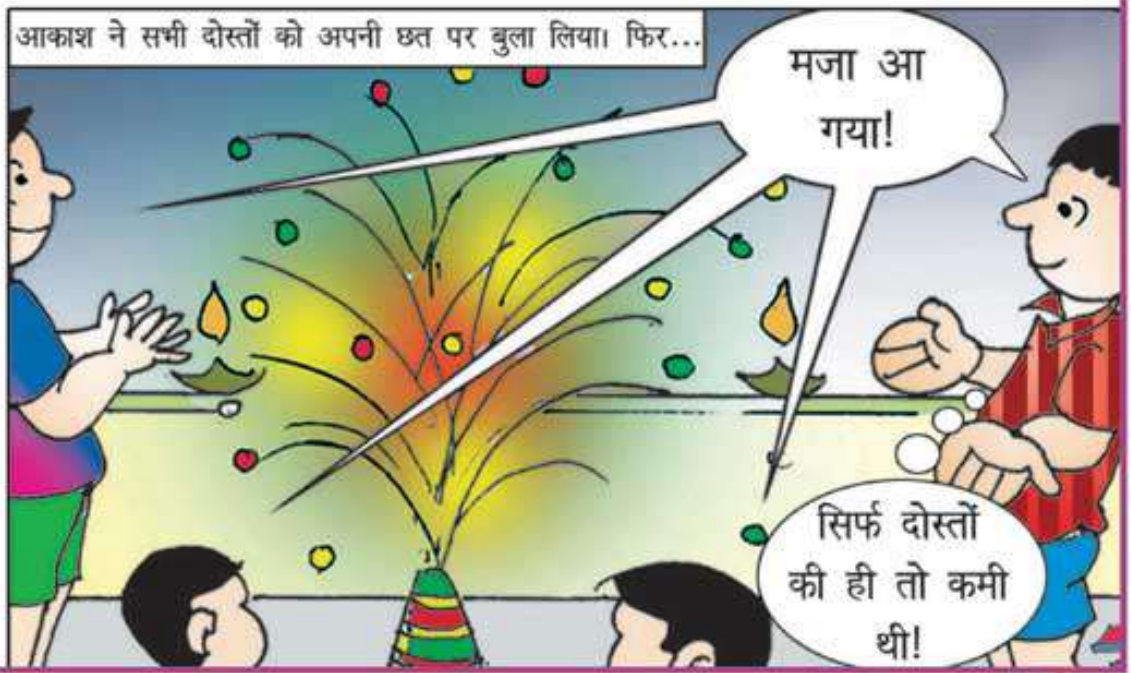

# अनोखा नृत्य

– नीलम राकेश

समर्थ और स्मिता शाला से लौटे तो बहुत चहक रहे थे।

उन्हें देखते ही माँ बोलीं– ''अरे वाह! आज तो तुम दोनों बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हो।''

''हाँ माँ! आज शाला में बहुत मजा आया।'' स्मिता प्रसन्नता से चहकी।

''स्मिता सही कह रही है। आज तो शाला में आनंद ही आ गया।'' समर्थ ने बहन की बात का समर्थन करा।

''अच्छा पहले तुम दोनों कपड़े बदल कर खाने की मेज पर आओ। और हाँ हाथ अवश्य धो लेना। खाने के साथ खाने की मेज पर बात करते हैं।'' माँ ने आदेश सुनाया।

दोनों आज्ञाकारी बच्चों की तरह अपनी पढ़ने वाली मेज पर बस्ता रख कर घूमे तो माँ मुस्करा रही थीं। यह देखकर दोनों के मुखड़े पर मुस्कान आ गई। वे मुस्कुरा कर अपने कमरे में चले गए। कुछ ही देर में समर्थ खाने की मेज पर आकर बैठ गया। उसी समय स्मिता आई और अपने हाथ को दिखाते हुए बोली– ''हाथ धो कर आई हूँ माँ!''

''बहुत अच्छा।''

''मैं भी तो हाथ धोकर आया हूँ।'' समर्थ जल्दी से बोला।

''तुम दोनों बहुत अच्छे बच्चे हो।''

माँ अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाई थीं कि स्मिता चहकी, ''अरे वाह! आज का तो दिन ही अच्छा है।''

''अब क्या हुआ?'' आश्चर्य से समर्थ ने पूछा।

''देखो ना भैया! माँ ने आज मटर–पनीर बनाया है।''

''मेरी तो भूख खुल गई।'' कहते हुए समर्थ मटर–पनीर निकालने लगा।

मुस्कुराते हुए माँ दोनों बच्चों को प्यार से निहारती रहीं।

''अच्छा! अब बताओ तुम लोग, तुम्हारे शाला में क्या हुआ था, जो तुम लोग इतना चहक रहे हो?''

''आज हमने शाला में अनोखा नृत्य देखा।'' समर्थ बोला।

''मतलब?'' माँ ने आश्चर्य से पूछा।

''आज हमारे शाला में कुछ लोग आए थे। उन्होंने प्रार्थना सभा में गुड्डा, गुड़िया का नृत्य दिखाया। वे उसी से पूरी कहानी सुना रहे थे। बहुत आनन्द आया। सुंदर-सुंदर, रंग-बिरंगे गुड्डा-गुड़िया। इतना मटक-मटक कर नृत्य कर रहे थे।'' स्मिता ने अपनी प्रसन्नता का कारण बताया।

''और न माँ! उनके हाथ-पैर में डोरी बंधी थी कोई पीछे से उनकी उसी डोरी से चला रहा था। बहुत ही मजेदार लग रहा था। बहुत आनन्द आया।'' समर्थ बोला।

''बेटा इस कला को कठपुतली कहते हैं। यह काष्ठ कला का अद्‌भुत नमूना है।''

''कठपुतली का क्या मतलब होता है? यह इनका नाम है?''

''कठपुतली यानी काठ की बनी हुई गुड़िया।'' माँ बोलीं।

''अच्छा।''

''यह कला बहुत पुरानी है एक किवदंती के अनुसार भगवान शिव ने काठ की गुड़िया के अंदर प्रवेश कर नृत्य कर माता पार्वती का मनोरंजन किया था। तभी से इस कला का जन्म हुआ। वैसे तुम लोगों ने सिंहासन बत्तीसी की कहानी तो पढ़ी ही है उसमें ३२ पुतलियों का उल्लेख आता हैं। कहने का अर्थ है कि यह बहुत प्राचीन काल से चली आ रही कला है। राजस्थान में बहुत सुंदर रंग-बिरंगी कठपुतलियाँ बनाई जाती हैं।''

''अरे वाह! माँ आपने तो हम लोगों को इसके बारे में बहुत सारी बातें बताईं। स्मिता सही कह रही थी आज का दिन बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा देखा और बहुत अच्छा जाना।'' समर्थ बोला।

''और बहुत अच्छा खाया भी तो भैया!'' स्मिता ने जोड़ा।

''और अब थोड़ा विश्राम कर लो।'' माँ स्नेह से बोलीं।

''हाँ!'' कहते हुए दोनों बर्तन उठाने में माँ की सहायता करने लगे।

**- लखनऊ (उ. प्र.)**

लघुकथा

# हकदार

**- मीरा जैन**

दीपावली के दूसरे दिन सफाई अभियान के अंतर्गत सफाईकर्मियों के एक समूह को पुरस्कृत करने की घोषणा के साथ ही स्पष्ट किया गया कि- ''इस समूह वालों ने मात्र एक घंटे में ही पटाखों का गाड़ी भर कचरा एकत्रित कर लाए, जबकि दूसरे समूह वालों को इतना ही कचरा एकत्रित करने में पाँच से छः घंटे लग गए। इतनी बेहतरीन कार्य क्षमता को देखते हुए उन्हें पुरस्कृत किया जा रहा है। ताकि भविष्य में इनका कार्य आप सभी के लिए अनुकरणीय बने।''

पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

पुरस्कृत होने वाले समूह के मुखिया ने मंच पर पहुँच धन्यवाद देते हुए कहा-

''पुरस्कार के पात्र तो उस गांव के बच्चे हैं जिन्होंने बुजुर्गों के स्वास्थ्य, अस्थमा पीड़ितों, पर्यावरण की सुरक्षा, पशु-पक्षी आदि का ध्यान रखते हुए निर्णय किया कि सब मिलकर एक ही स्थान पर गांव के पास ही बाहर बने मैदान में ही आतिशबाजी करेंगे।''

**- उज्जैन (म. प्र.)**

घर का वैद्य

# बंद नाक, टांसिल और खांसी का उपचार

– उषा भंडारी

दीपक ने पूछा– दादा जी! नाक बंद हो गई हो तो क्या करें? बीच में राजू बोला गरम पानी की भाप लेने से बंद नाक खुल जाती है।

दादा जी ने कहा– हाँ, गरम पानी की भाप लेने से नाक खुल जाती है। दादा जी ने आगे बताया– शुद्ध सरसों के तेल की दो–तीन बूँद दोनों नथुनों में रात को सोते समय डाले। इससे बंद नाक खुल जाती है। यदि ऐसा एक माह तक लगातार करें। तो सालों पुराना जुकाम, नकसीर और सिर दर्द ठीक हो जाता है। मीरा ने पूछा– दादा जी! गलसुढे (टाँसिल) बढ़ जाएँ।

गले में सूजन आ जाए तो क्या करना चाहिए?

दादा जी ने पूछा– सुनीता! यह बताओ कि शहर के डॉक्टर इस बीमारी में दवा के साथ–साथ क्या सलाह देते हैं?

सुनीता ने कहा– गुनगुने पानी में चुटकी भर नमक डालकर गरारे करने का कहते हैं। ऐसा दिन में तीन बार करने की सलाह देते हैं।

दादा जी ने बताया– हाँ, ऐसा करने से लाभ होता है। दादा जी ने आगे कहा एक गिलास कुनकुने पानी में एक नींबू निचौड़ दें। उसमें थोड़ा शकर या नमक मिलाकर गरम–गरम पी लें।

दादा जी ने कहा– चुटकी भर हल्दी या पीसी हुई काली मिर्च मिलाकर गरम–गरम दूध पीना चाहिए। ऐसा तीन–चार दिन तक सुबह शाम करें। इससे गले की सूजन और टाँसिल में बहुत लाभ होता है।

राजू ने कहा– दादा जी! खाँसी का उपचार भी आज ही बता दीजिए?

दादा जी ने कहा– ठीक है। सोने से पहले खाँसी के कुछ उपाय बताता हूँ। ये उपाय निमोनिया में भी लाभ करता है। दादा जी ने आगे बताया– तुलसी के १०–१० पत्ते और थोड़ा–सा काली मिर्च का चूरन एक गिलास पानी में उबाल लें। जब पानी आधा रह जाए तब छान लें और ठण्डा होने पर पी जाएँ। दूसरा उपाय बताते हुए दादा जी ने कहा– एक चम्मच शहद और आधा चम्मच अदरक का रस लें। दोनों को मिलाकर रोगी को दिन में तीन बार चटाएँ। दादा जी ने फिर बताया तुलसी के पत्तों का काढ़ा पीने से सूखी खाँसी ठीक हो जाती है।

दादा जी ने अगला उपाय बताया– काली मिर्च को पीसकर छान लें। चुटकी भर चूरन को एक चम्मच शहद में मिलाकर रोगी को दिन में दो बार चटाएँ। इससे खाँसी में कम समय में आराम मिलता है।

राजू ने जानना चाहिए– ऐसा कितने दिन तक किया जाना चाहिए?

दादा जी ने कहा– वैसे चार–पाँच दिन में खाँसी बिल्कुल ठीक हो जाती है। आवश्यकता पड़ने पर अधिक दिन तक भी घरेलू दवा ले सकते हैं। इतना बताकर दादा जी ने बच्चों से कहा चलो जाकर सो जाओ, बाकी बातें कल करेंगे। सभी बच्चे सोने चले गये।

– इन्दौर (म. प्र.)

देवपुत्र पत्रिका का सितम्बर २०२३ का 'बाल अहिल्या अंक' देखकर मन प्रसन्नता से खिल उठा। बहुत ही सुंदर चित्रों से सजा यह अंक निश्चित रूप से बाल पाठकों को लुभायेगा। अहिल्या विशेषांक को अपने बाल पाठकों को समर्पित करते हुए संपादक जी द्वारा अपनी बात में लिखे ये शब्द, ''बाल अहिल्या के प्रेरक बचपन की छाप आपके मन को भी संस्कारित कर उसमें समाज एवं देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा जगाएगी, ऐसा मानते हुए मैं यह अंक आपको सौंप रहा हूँ।'' देवपुत्र पत्रिका का देश के भविष्य को संस्कारित करने के संकल्प का उद्घोष करते हुए प्रतीत होते हैं।

४६ खण्डों में विभक्त लोकमाता अहिल्यादेवी होळकर का पूरा जीवन चरित्र चलचित्र की तरह आँखों के आगे से गुजरता जाता है। देवपुत्र का यह प्रयोग और प्रयास निश्चित रूप से बाल पाठकों को अपने स्वर्णिम इतिहास से जोड़ने का एक प्रेरक प्रयास है। जिसके लिए संपादक जी सहित पूरी टीम बधाई की पात्र हैं। इस अंक के चित्रकार और लेखक को हृदयतल से बधाई।

**– नीलम राकेश, लखनऊ (उ. प्र.)**

देवपुत्र का यह अंक देखा। सचमुच यह एक नया किंतु ठोस व प्रभावी प्रयोग है। हर पृष्ठ पर आधा पृष्ठ जानकारी और आधे पृष्ठ में संबंधित चित्र से पुस्तक चित्रकथा जैसा कलेवर लिए हुए हैं। बालोपयोगी सामग्री भी अलग-अलग शीर्षकों में विभक्त होने और संक्षिप्त होने से रोचक व उपयोगी है। इस विशेषांक के प्रकाशन पर पूरे संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

**– प्रकाश तातेड़, जयपुर (राजस्थान)**

प्रतिष्ठित बाल पत्रिका 'देवपुत्र' का सितंबर २०२३ का विशेष अंक मिला, जो देवी अहिल्याबाई होळकर के बाल्यकाल पर आधारित है। मुख पृष्ठ इस वीरांगना व परिवेश के शानदार चित्रों से सजा है।

वास्तव में यह बालकों के लिए एक सुंदर और महत्वपूर्ण उपहार है। हम मानते हैं भारत का भविष्य हमारे बच्चे हैं और बच्चों के श्रेष्ठ संस्कार रोपण का कार्य 'देवपुत्र' पत्रिका निष्ठापूर्वक कर रही है।

४६ शीर्षक सहित खण्डों में विभाजित इस अंक में लोकमाता अहिल्यादेवी होळकर की बाल्यावस्था को पूर्णरूपेण चित्रित किया गया है। इसमें उनकी बाल्यावस्था की सहज घटनाएँ बड़े ही रोचक अंदाज में प्रस्तुत की गई है, जो बच्चों के मन में सीधा उतरती प्रतीत होती हैं। अहिल्याबाई के जन्म, शिक्षा-दीक्षा एवं एक साधारण किसान परिवार से राजघराने तक के सफर का चित्रण है। इस अंक में बचपन में मिट्टी से हाथी-घोड़े बनाना, राजमहल बनाना, शिव शंकर की पिंडी बनाना, पक्षियों को दाना, गाय को चारा खिलाना, भिक्षुओं का सम्मान करना, समरसता का भाव, शिक्षा की लगन, बचपन से ही शिव स्तोत्र पढ़ना आदि गुणों से ओतप्रोत जीवन बालकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी है।

इस प्रकार ये चित्रमयी गाथाएँ भक्ति, मुक्ति, शक्तियुक्त, न्याय-नीति की इतनी सारी विशेषताओं से युक्त लोकमाता देवी होळकर के बहुतआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती हैं। उनके बचपन में जिज्ञासु भाव, विनयशीलता और निर्भीकता का चित्रण सचमुच इस उचित को सिद्ध करता है कि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'।

ऐसी विलक्षण विभूति की चित्रमय प्रस्तुति बालकों को अवश्य प्रभावित करेगी। खूबसूरत चित्रांकन लोकमाता अहिल्या देवी होळकर की विलक्षण व संपूर्ण कथा में चार चांद लगाता है। गोपाल माहेश्वरी जी का संपादकीय और संपूर्ण जीवनी का चित्रमय प्रस्तुति सचमुच महनीय कार्य है और अन्यों को भी अपने क्षेत्र की विशिष्ट हस्तियों के बारे में इसी प्रकार बच्चों को परिचित कराए जाने के लिए मुहिम शुरु करने का मार्गदर्शन करती है। ऐसी प्रेरक जीवनियाँ बालकों में बचपन में ही संस्कार रोपित करने में अवश्य ही सहायक सिद्ध होंगी।

इस अंक की सबसे बड़ी विशेषता यह लगी कि यह अत्यंत सरल, सहज, सुबोध भाषा में इस तरह चित्रित किया गया है कि बच्चे इसे बिना रुके एक साँस में ही पढ़ जाएँगे। अहिल्याबाई की जीवनी में बताया गया है कि किस प्रकार किसान परिवार से वह मालवा के सूबेदार मल्हारराव होळकर की पसंद और उनके बेटे खंडेराव की पत्नी बनी। उनके श्वसुर का दोस्त बनकर अहिल्या देवी की प्रतिभा को विकसित करने का प्रयास भी उदाहरण योग्य है। यह जीवनी इस बात की भी पुष्टि करती है कि प्रत्येक बालक में कुछ विशिष्ट गुण होते हैं, यदि समय रहते उन्हें समझकर, उनके विकास में उचित मार्गदर्शन मिले तो वह एक समाज का महत्वपूर्ण और प्रेरणादाई चित्र बन सकता है। लोकमाता अहिल्या देवी होळकर के जीवन चरित्र से बालकों में अनेकानेक संस्कार रोपित करने का प्रयास हुआ है।

देवपुत्र का बाल अहिल्या अंक सचमुच बालकों के लिए अति आवश्यक है। इसे प्रत्येक विद्यालय में बच्चों को पढ़ाया जाना उचित है। पत्रिका के इस शानदार, महत्वपूर्ण और संग्रहणीय अहिल्याबाई अंक के लिए, मैं चित्रकार महोदय को सुंदर व प्रासंगिक चित्रों के लिए हार्दिक बधाई और आदरणीय गोपाल माहेश्वरी को इस नवाचार के लिए साधुवाद देती हूँ।

**– डॉ. शील कौशिक,**
**सिरसा (हरियाणा)**

## बाल बनाने वाला और गोपाल

**– तपेश भौमिक**

एक दिन महाराज का बाल बनाने वाला गोपाल की हजामत बना रहा था। उसके दिमाग में कई दिनों से एक बात चरमरा रही थी कि गोपाल उसकी ही जाति का होकर कितना राजसी ठाट–बाट से रहता है। केवल दरबार में जाकर गोल–मोल बातें बनाता है और महाराज के साथ घूमता रहता है। दूसरी ओर एक वह है जो लोगों के हजामत बनाता फिरता है जब कि दिमाग से तो वह गोपाल से भी अधिक तेज है।

इस कुटिल भावना के कारण उसकी नींद उचाट होने लगी। उसे यह पता था कि मंत्री और गोपाल के बीच साँप–नेवले का–सा संबंध है। बस क्या था, जैसी सोच वैसा काम। दूसरे ही दिन मंत्री की हजामत बनाते–बनाते उसने मन की भड़ास निकाल दी। मंत्री को उसकी बात जँच गई। उसने बाल बनाने वाले से कहा कि वह अगर गोपाल को अपनी बुद्धि के बल पर नीचा दिखा सकता है तो वह महाराज से उसकी सिफारिश कर सकता है।

उस दिनों गोपाल की माँ वृद्ध हो चुकी थी। और

बीमार चल रही थी। माँ जब जो कहती गोपाल वहीं लाकर खिलाने का प्रयत्न करता था। तभी एक दिन माँ ने हिलसा मछली खाने की इच्छा प्रकट की तो वह बिना कोई समय गँवाए बाजार की ओर भागा। उसने बाजार से एक बड़ी-सी हिलसा मछली खरीदी। अब वह मछली को हाथ में लटकाए लंबे-लंबे डग भरता हुआ घर कि ओर चला जा रहा था। थोड़ी ही दूरी पर चलते-चलते राह पर राजा के बाल बनाने वाले से भेंट हो गई। उसने गोपाल के हाथ हिलसा मछली देखी तो उसने एक चाल चली। उसको पता था कि गोपाल की माँ बहुत बीमार है और वह उनकी इच्छानुसार जब जैसा हुआ खाना खिला रहा है। ''अरे गोपाल भाई! आप मछली लेकर कहाँ जा रहें हो?'' बाल बनाने वाले ने रोनी सूरत बनाकर पूछा।

''मैं माँ के लिए हिलसा मछली लिए जा रहा हूँ। अब तो उनके परलोक-यात्रा का समय हो गया है।''

''मैं आपके यहाँ से होकर आ रहा हूँ। माँ जी की हालत बहुत नाजुक है। जब कभी भी अशौच की स्थिति बन सकती है।'' बाल बनाने वाले ने लगभग रोते हुए कहा। यह सब कुछ मछलीवाला अपनी दुकान से ही देख रहा था। उसने भी सोचा कि गोपाल ने मछली बाल बनाने वाले को क्यों दे दी। गोपाल उसके झाँसे में आ गया। उसने तुरंत हिलसा मछली बाल बनाने वाले के हवाले करते हुए कहा, ''इसे तुम ले जाओ। पता नहीं कब क्या हो जाए। अशौच की स्थिति में फलाहार करना होता है। मछली को फेंक देना पड़ सकता है।'' बाल बनाने वाले ने बनावटी दुख प्रकट करते हुए मछली ले ली और खुशी-खुशी गुनगुनाते हुए अपने घर की राह ली। उधर गोपाल ने घर जाकर देखा कि ईश्वर की कृपा से माँ बिस्तर से उठ कर बैठी हुई है। बस क्या था, गोपाल को सारा माजरा क्या है, समझ में आ गया। उसने बिना कोई समय गँवाए उल्टे पाँव मछली वाले के यहाँ जाकर कहा कि शाही बाल बनाने वाले के यहाँ मेहमान आए हुए हैं, उसे जल्दबाजी थी, इसलिए मैंने अपनी हिलसा मछली उसे दे दी। तुमने देखा भी होगा कि थोड़ी देर पहले ही मैंने अपनी मछली उसे दे दी। अब शांति से एक और मछली मुझे दे दो, बाल बनाने वाला शाम को आकर तुम्हें पैसा दे देगा।

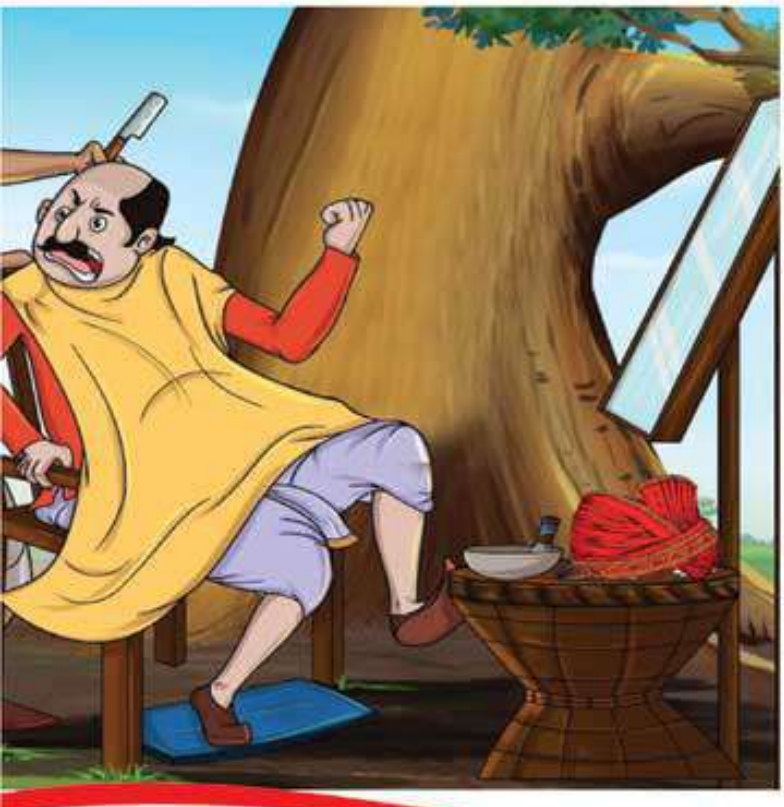

मछली वाले की नजरों के आगे कुछ दूर पर ही पहली घटना घटी थी। उसने भी दूर से देखकर यह समझ लिया था कि बाल बनाने वाले को जल्दबाजी होगी, इसलिए गोपाल की मछली लेकर जा रहा है। उसने ठीक पहली मछली के आकार की ही एक और हिलसा मछली गोपाल को दे दी।

शाम होते ही मछली वाला बाल बनाने वाले के घर पैसों के लिए जा धमका। उसने बात न बढ़ाकर मछली वाले को पैसे दे दिये क्योंकि घर में मेहमान थे, वे सुनेंगे तो क्या कहेंगे। उसने केवल यह कहा कि वह बाद में गोपाल से निबट लेगा।

अगले ही दिन वह मंत्री जी से जाकर मिला और सारी बात कह सुनाई। मंत्री ने बाल बनाने वाले को दिलासा देते हुए कहा कि उसे निराश नहीं होना चाहिए, गोपाल बड़ा घाघ आदमी है। यदि राज दरबार में नौकरी पानी है तो लगे रहो भाई।

**– कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)**

कहानी : विश्व मत्स्य दिवस २१ नवम्बर

# हम किसी से कम नहीं

– डॉ. रंजना जायसवाल

शहर के अंतिम छोर पर एक बड़ा–सा समुद्र था। इतना बड़ा कि बस पूछो ही मत, उस समुद्र में बहुत सारे पानी के जहाज, नाव और मोटर बोट चला करती थी। दिनभर घूमने वालों की भीड़ लगी रहती। उस समुद्र में बहुत सारी बड़ी–बड़ी मछलियाँ रहती थी, जो यहाँ से वहाँ से यहाँ दिनभर तैरती रहती। समुद्र की लहरें दिनभर शोर मचाती रहती, कभी–कभी तो वह इतना क्रोधित हो जाती कि अपना सारा पानी बाहर की ओर फेंक देती। लोग डर के मारे पीछे हट जाते।

समुद्र के बगल में ही एक नदी रहती थी, एकदम शांत। उसके किनारे बैठना सबको बहुत अच्छा लगता था। उस नदी में बहुत सारी रंगीन छोटी मछलियाँ रहती थी। जिन्हें एक–दूसरे से बहुत प्यार था। उन मछलियों में एक सबसे शांत और खूबसूरत मछली थी सोना। सोना अपने नाम की तरह ही सोने जैसे दिल की थी। वह सारी मछलियों में सबसे पुरानी थी, कभी भी कोई बात होती तो सबको सम्भाल लेती। छोटी मछलियों हमेशा सोना से जिद करती रहती।

''दीदी! चलो न हम लोग एक दिन समुद्र की तरफ घूम कर आते हैं।'' और सोना उन्हें प्यार से मना कर देती।

''नहीं–नहीं हम वहाँ नहीं जा सकते हैं, उनकी दुनिया अलग है और हमारी दुनिया अलग।''

''हम वहाँ हमेशा रहने के लिए थोड़ी जा रहे बस घूम फिर कर आ जाएँगे।''

छोटी मछलियाँ जिद करने लगती पर सोना मछली बिल्कुल भी तैयार नहीं होती। वो जानती थी उस दुनिया में जाना खतरे से खाली नहीं। समुद्र दादू वैसे भी बहुत गुस्सैल है, पता नहीं हमारा जाना उन्हें पसन्द आये भी या नहीं। वैसे भी वहाँ बड़ी–बड़ी मशीनों वाली बोट चलती है, उन्हें तो आदत है। हम में से किसी को कोई चोट लगा गई तो– वैसे भी किसी के घर बिना आज्ञा के नहीं जाना चाहिए।

उस दिन रविवार था, छुट्टी का दिन बहुत सारे लोग अपने परिवार के साथ घूमने आए थे। लोग अपने साथ बहुत सारा खाने का सामान चिप्स, चॉकलेट, वेफर्स, पूड़ी–सब्जी और न जाने क्या–क्या लेकर आए थे। बहुत सारे लोगों ने खाना खाया और कचरा वहीं फेंक दिया। समुद्र दादू गुस्से से लाल–पीले हो गए। वो जोर से दहाड़े पानी की बड़ी–बड़ी लहरें उठने लगी। लोग डर के मारे दुबक गए। समुद्र की मछलियाँ इधर–उधर भागने लगी, घबराहट में एक बड़ी सी मछली गलती से नदी की तरफ आ गईं। उसको देखकर नदी की छोटी मछलियाँ घबरा कर सोना मछली के पीछे छिप गई।

बाप रे कितनी बड़ी थी वो लाल–लाल बड़ी

आँखें जब वो सांस लेती तो कितने सारे बुलबुले उठने लगते। जब वो तैरती तो लगता नदी में भूचाल आ गया। सब यही सोच रहे थे अब क्या होगा। वो बड़ी मछली जोर से चिल्लाई। ''आज से मैं यही रहूँगी।''

''पर आप तो वहाँ रहती है समुद्र में, आपका घर तो वहाँ है।'' छोटू मछली ने डरते-डरते कहा।

''मेरा मन मैं कहीं भी रहूँ, तुमसे मतलब, तुम्हें दिक्कत है?''

उस बड़ी सी मछली ने अपने बड़े से मुँह को छोटू मछली के मुँह के पास सटाकर कहा, छोटू मछली की डर से हालत खराब। तब सुनहरी मछली ने कहा।

''सोना दीदी हमेशा कहती है कि आप लोगों की दुनिया अलग है और हमारी दुनिया अलग वैसे भी हमें किसी के घर उसकी आज्ञा के बिना नहीं जाना चाहिए।''

वह बड़ी मछली गुस्से से लाल हो गई, ''कौन है तुम्हारी सोना दीदी जरा मैं भी तू मिलूँ।''

''जी मैं हूँ सोना, सोना मछली। कहिए क्या कहना है आपको।''

''आज से मैं यही रहूँगी, यही मेरा घर है। किसी को कोई समस्या है, उससे मुझे कोई मतलब नहीं।''

सोना मछली जानती थी उनके घर एक बहुत बड़ी मुसीबत आ गई है। डर तो उसे भी लग रहा था पर डर कर कैसे काम चलता। उसने साहस दिखाते हुए कहा- ''यदि आप अतिथि की तरह हमारे घर आई हैं तो स्वागत है पर आप हमेशा यहाँ नहीं रह सकती क्योंकि यह हमारा घर है।''

''क्या अब तुम हमें बताओगी कि किसे यहाँ रहना चाहिए और किसे नहीं।'' बड़ी मछली ने गुस्से में कहा, सोना मछली शांति से उसकी बातें सुन रही थी।

''हम नहीं चाहते कि किसी तरह का लड़ाई-झगड़ा हो। आप शांति से यहाँ से चली जाइए।''

''और अगर मैं नहीं गई तो... ?''

बड़ी मछली ने बड़ी जोर से कहा। सोना को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। उसके बड़े-बड़े दाँतों को देखकर तो वह भी डर गई थी। वह एक बार मुँह खोलेगी तो सारी छोटी मछलियों को एक बार में ही गटक कर जाएगी। अब क्या किया जा सकता था। तब सोना ने कहा- ''हमारी एक शर्त है आप तभी इस नदी में रह सकती हैं, जब आप मुझे दौड़ में हरा दें।''

बड़ी मछली ने सोना को ऊपर से नीचे तक देखा और बड़ी जोर से हँसने लगी।

''तुमसे और दौड़ तुम एक मिनट में हार जाओगी, चलो ठीक है यह भी करके देख लेते हैं।''

सारी मछलियाँ एक किनारे सोना और बड़ी मछली की दौड़ देखने लगी। वह समझ नहीं पा रही थी कि आखिर सोना के दिमाग में क्या चल रहा है?

बड़ी मछली ने बहुत तेजी से तैरना शुरू किया और सोना ने छोटा वाला रास्ता पकड़ा। वह जानती थी बड़ी मछली आगे जाकर बुरी तरीके से फँस जाएगी क्योंकि नदी के बीचों-बीच ढेर सारी जलकुंभी थी। जलकुंभी मतलब पानी में ऐसे पौधे जिनमें मनुष्य एक बार फँस जाए तो उसका निकलना मुश्किल होता है। बड़ी मछली बहुत तेजी से तैर रही थी कि वह जल्दी से नदी के किनारे तक पहुँच जाए पर वह तो फँस गई जलकुम्भी में.... सोना किनारे खड़ी मुस्कुरा रही थी। बड़ी मछली समझ गई थी सोना से जीतना आसान नहीं था।

''क्षमा करना सोना मुझसे गलती हो गई, कृपया मुझे यहाँ से निकालो।''

बड़ी मछली ने रोते हुए कहा- ''सोना ने छोटी मछलियों की सहायता से बड़ी मछली को निकाला। बड़ी मछली को अपनी गलती का अनुभव हो गया था और वह वापस अपने घर चली गई।

**- मिर्जापुर (उ. प्र.)**

लघुकथा

# उजाला

**- डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'**

चमगादड़ ने उल्लू से कहा- क्यों भाई! उजाला कैसा होता है? उल्लू ने आश्चर्य से कहा- उजाला! यह क्या होता है, मुझे तो नहीं पता। चमगादड़ ने उल्टे लटके-लटके ही अपने पंख फड़फड़ाये लेकिन होता तो है, किससे पूछूँ? चलो चलते हैं। चमगादड़ और उल्लू पेड़ से उतरकर रात के अँधेरे में पंख फड़फड़ाते हुए जंगल से गुजर रहे थे तभी जुगनू चमचम करते हुए इन दोनों को देखकर चुपचाप पत्तों की ओट में छिपने लगा।

चमगादड़ ने आवाज लगाई- ओ प्यारे जुगनू! मुझे बताओ उजाला कैसा होता है? जुगनू ने अपनी देह से लाइट (रेडियम) चमकाते हुए कहा- देखो चमगादड़ बहन, उजाला ऐसा होता है। चमगादड़ ने कहा- किन्तु मैंने सुना है, वह तो दिन में होता है।

इन सबकी बातें कोटर में छुपा तोता सुन रहा था। वह बहुत बातूनी था, उससे चुप न रहा गया। वह बोला- अरे निशाचरो! कभी सुबह सूर्योदय होने पर बाहर निकलो, दिन में घूमो तो पता चलेगा उजाला कितना सुखदायी होता है। सारी सृष्टि अपने-अपने काम पर लग जाती है। सारे पंछी पंख पसार कर नील गगन की सैर पर निकलते हैं। सूरज की किरणें सबका स्वागत करती हैं। तुम लोग आलसियों की तरह दिन भर सोते हो और रात में विचरण करते हो और फिर पूछते हो, उजाला कैसा होता है? जाओ अभी सोओ, मुझे भी सोने दो। इतना कहकर तोता कोटर में घुस गया। चमगादड़, उल्लू और जुगनू सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगे।

**- कटनी (म. प्र.)**

# झूठा

चित्रकथा-

काशीराम जहां भी भोज होते देखता, झूठी रिश्तेदारी बताकर वहां भरपेट खाता. एक बार जब वह ऐसा ही कर रहा था-

अतिथियों को भोजन कराने वाले आदमी को संदेह हुआ -

कृपया बताएंगे आप कौन हैं?

..अजी मैं दूल्हे के चाचा का छोटा दामाद हूं..

मक्कार..मुफ्तखोर..!!

ताड़

..ये श्राद्ध का भोज है, जिसमें तू दूल्हे से रिश्तेदारी बता रहा है ..

# स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा

चन्द्रयान–३ और आदित्य एल–१ के सफल अभियानों से भारत का यश अन्तरिक्ष की अपार सीमाओं तक विस्तार पा चुका है लेकिन यह बात तब की है जब भारत के पहले और संसार के १३८ वें अन्तरिक्ष यात्री के रूप में श्री राकेश शर्मा भारत और रूस के संयुक्त अन्तरिक्ष अभियान सम्मिलित हुए थे।

वे तब भारतीय वायु सेना में स्क्वाड्रन लीडर थे। यह एक मानव सहित अन्तरिक्ष यात्रा अभियान था जिसमें सोवियत रूस के अन्तरिक्ष यात्री कर्नल यूरी वासीकेविच माल्यशेव और ग्रेनेडी मिखाइलोचिव स्त्रेकालोव 'सोयूज टी–११' नाम के अन्तरिक्ष यान पर श्री राकेश शर्मा के साथ सवार हो २ अप्रैल १९८४ को अन्तरिक्ष में उड़ चले।

इस अन्तरिक्षयान ने उन्हें अन्तरिक्ष केन्द्र सेल्यूट–७ पर छोड़ा। यहाँ ये तीनों आठ दिन रहे। ११ अप्रैल १९८४ को वापसी यात्रा आरंभ हुई। पृथ्वी पर लौटने के पूर्व उनके यान ने पृथ्वी की १२० परिक्रमा की।

श्री राकेश शर्मा १३ जनवरी १९४९ को पंजाब प्रांत के पटियाला नगर के सपूत जुलाई १९६६ में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में वायुसेना के कैडेर बने थे। १३ जून १९७० को उन्हें पायलट ऑफीसर बनाया गया था। और १९७१ के भारत पाक युद्ध में आपने एम.आय.जी. विमान को उड़ाते हुए अनेक महत्वपूर्ण अभियानों को भी सफलतापूर्वक पूरा किया था।

आपको भारत सरकार में अशोक चक्र से सम्मानित कर वीर पूजा का अपना कर्त्तव्य निर्वाह किया।

आपके साथी अन्तरिक्ष यात्रियों श्री यूरी वासिलेविस माल्यशेव एवं ग्रेनेडी मिखाइलोचिव स्त्रेकालोव को भी अशोक चक्र सम्मान प्रदान किया गया।

# पंच पर्व का मौसम आया

– डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

(भगवान धन्वन्तरि)

सबके मन में हर्ष समाया।
पंच पर्व का मौसम आया।
पहला दिन धनतेरस का है,
होती यम, कुबेर, की पूजा।
अमृत कलश निकाला जिसने,
धन्वन्तरि–सा देव न दूजा।
आभूषण की खुशियाँ लाया।
पंच पर्व का मौसम आया।

द्वितीय दिवस है नरक चतुर्दशी,
नरकासुर का वध कर डाला।
मुक्त करा बंदी, मोहन ने,
पहनाई मुक्ति की माला।
स्वतंत्रता का दीप जलाया।
पंच पर्व का मौसम आया।

तृतीय दिवस है महा पर्व यह,
होता हर घर लक्ष्मी पूजन।
अनगिन दीप जलाए जाते,
होता है उल्लसित हर एक मन।
अंधियारे को मार भगाया।
पंच पर्व का मौसम आया।

दिन चौथा है अन्नकूट का,
गोवर्धन की पूजा होती।
पकवानों से भोग लगाकर,
बिखराते श्रद्धा के मोती।
क्रोध इंद्र का काम न आया।
पंच पर्व का मौसम आया।

दिवस पाँच के भाई दूज का,
सजता है भाई का मस्तक।
संकट आए कोई बहन पर,
करे सामना अंतिम क्षण तक।
बहनों संग भैया मुस्काया।
पंच पर्व का मौसम आया।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

(नरकासुर वध)

जन्मदिन ३० नवम्बर, निधन २३ नवम्बर

# आचार्य जगदीश चंद्र बसु

– मनीषा बनर्जी

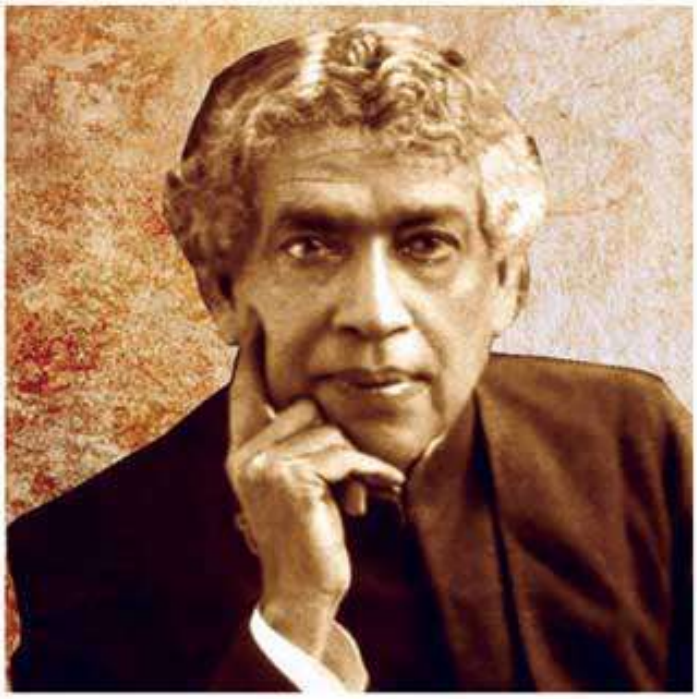

नटखट जगदीश ने नित नये हुड़दंग से अपनी माँ और दादा–दादी की नाक में दम कर रखा था। चंचलता की साकार मूर्ति था नन्हा बालक जगदीश। जब से बोलना सीखा तभी से अपनी मीठी तोतली बोली में बालसुलभ जिज्ञासा युक्त प्रश्नों की अनवरत बौछार से सभी बड़े–बूढ़ों की जान सांसत में डालने लगा।

कविगुरु रवींद्र नाथ ठाकुर की काबुलीवाला कहानी की मिनी जिस प्रकार डेढ़ वर्ष की आयु से बातूनीपन में सबके कान काट सकती थी ठीक वही हाल यहाँ भी था।

नन्हें जगदीश के प्रश्न होते भी तो थे ऐसे कठिन व धारदार कि अच्छे–अच्छों की बोलती बंद हो जाए। कहते हैं ना– 'पूत के पाँव पालने में दिख जाते हैं।' अल्पायु से बालक जगदीश की अद्भुत मेधा शक्ति प्रकाश में आने लगी। उसके पैने प्रश्नों की धार से जहाँ बाकी सब बचने का प्रयास करते थे वहीं इसके ठीक उलट थे जगदीश के पिता।

प्रशासनिक सेवा में काफी ऊँचे पद पर सुशोभित श्रीमान भगवान चंद्र बसु ही उन विरले व्यक्तियों में थे जो अपने सुपुत्र के हाई ऑर्डर थिंकिंग स्किल्स (उच्च क्रम विचार कौशल) वाले अत्यंत कठिन प्रश्नों से ना तो कभी घबराते थे और ना ही कभी विरक्त होते थे। जगदीश जब अपनी शैशवावस्था में ही था तभी उन्होंने यह भाँप लिया था कि उनका यह पुत्र आगे चलकर न केवल (तब अविभाजित) भारतवर्ष अपितु समस्त विश्व के सार्वकालिक महानतम वैज्ञानिकों में से एक बनेगा।

दोनों माता–पिता अपने इस अत्यंत प्रखर बुद्धि बालक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पूरे धैर्य व विस्तार से देते थे। साथ ही साथ अपार धन दौलत के स्वामी होते हुए भी जगदीश चंद्र के माता–पिता ने उन्हें सनातन भारतीय संस्कृति और संस्कारों से भली भाँति दीक्षित किया।

एक बार बाल जगदीश अपने महलनुमा घर के लंबे चौड़े अहाते में लगे बड़े–बड़े पेड़–पौधों के बीच में विचरण कर रहे थे। कब शाम घिर आई बालक को पता ही नहीं चला। वैसे भी पेड़–पौधों और वनस्पति जगत से बालक जगदीश को न जाने कैसा अद्भुत सा लगाव था। ऐसा लगता था मानों यह पेड़–पौधों और वनस्पतियाँ उससे कुछ कहने–सुनने का जी तोड़ प्रयत्न कर रही हैं।

अपने आसपास के परिवेश से पूर्णत: अनभिज्ञ जगदीश ने एक पौधे के ऊपर हाथ रखा ही था कि उसके कानों में माता की शहद घुली मीठी आवाज गूँज उठी– ''नहीं बेटा! नहीं। शाम होने पर पेड़–पौधे भी हम मनुष्यों के समान ही सो जाया करते हैं। उन्हें नींद से मत जगाओ। तुम्हारे हाथ के स्पर्श की अनुभूति से वे नींद से चौंक कर उठ जाएँगे। किसी भी जीव–जंतु को पीड़ा पहुँचाना अन्याय है, पाप है।''

माँ की बात न केवल जगदीश बल्कि पूरी मानव

जाति के लिए विज्ञान का एक नया युगांतरकारी अध्याय खोलने वाली थी।

बड़े होकर सर जगदीश चंद्र बसु विश्व के उन बेहद चुनिंदा वैज्ञानिकों में से एक बने जिनका कार्यक्षेत्र विज्ञान के सबसे कठिन, चुनौतीपूर्ण व गूढ़तम विषयों तक विस्तृत रहा। जगदीश चंद्र बसु जहाँ एक ओर फिजिक्स के क्षेत्र में अपने शोध कार्य से भौतिक विज्ञान को समृद्ध कर रहे थे वहीं दूसरी ओर जीव–विज्ञान और वनस्पति विज्ञान के जगत में भी वे अपनी धाक सम्पूर्ण विश्व में जमा चुके थे।

उस समय अँग्रेज उनकी हुकूमत और समूचा पाश्चात्य जगत अपनी वैज्ञानिक श्रेष्ठता और श्रेष्ठतम संस्कृति के अहंकार में चूर थे।

तब गुलाम भारत के इस बंगाली सपूत ने यूरोप के तमाम श्रेष्ठतम वैज्ञानिकों के समक्ष अपनी क्रांतिकारी खोजों और आविष्कारों से सनातन भारतीय संस्कृति तथा वैज्ञानिक जीवन दर्शन का विजय ध्वज फहराया। आपने तथाकथित सभ्य व अत्याधुनिक पाश्चात्य जगत को ठोस वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर यह साबित कर दिखाया कि पेड़–पौधों में भी प्राण होते हैं।

वे भी हमारी तरह नियत समय पर सोते हैं। उनमें भी स्पर्श, ध्वनि तरंगों व सूर्य किरणों को अनुभव करने की और प्रतिक्रिया देने की क्षमता है। अपनी माता श्रीमती वामा सुंदरी बसु की दी गई बचपन की सीख ने श्री जगदीश चंद्र बसु को क्रेस्कोग्राफ जैसे उन्नत यंत्र के आविष्कार की प्रेरणा दी। विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों के अधिवेशन में जब युवा वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु, उनकी वैज्ञानिक खोजों को चुनौती दी गई तो उन्होंने मंच पर अपनी खोजों की प्रामाणिकता सिद्ध करने का प्रस्ताव रखा।

मंच के बीचो–बीच सर जगदीशचन्द्र बसु खड़े हैं। उनके सामने मेज पर एक पौधा और एक परखनली में पोटेशियम सायनाइड (सबसे अधिक घातक व तीव्रतम गति से असर करने वाला रासायनिक पदार्थ) रखे हुए हैं। पौधे भी चेतन पदार्थ होते हैं और जीवन मृत्यु के चक्र से गुजरते हैं। इसकी प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्होंने पोटैशियम सायनाइड की दो बूँदें उस पौधे पर टपकाईं। एक मिनट, दो मिनट और धीरे–धीरे न जाने और कितने ही मिनट बीतते चले गये पर पौधा तो जस का तस रहा। अब तो चारों ओर से जोरों की हँसी, विद्रूप और खिल्ली उड़ाने की आवाजें आने लगीं। इन सब प्रतिकूल परिस्थितियों के बाद भी पहाड़ के समान पूर्णत: अविचलित, निर्भीक खड़े रहे आचार्य जगदीशचन्द्र बसु।

पूर्ण आत्म विश्वास के साथ उन्होंने परखनली उठाई और अपने मुँह के अंदर उड़ेल ली। अब तो पूरी सभा में सुई पटक निस्तब्धता छा गई। घड़ी के काँटों की टिक–टिक पूरे हॉल में गूँज रही थी। वीर जगदीश चंद्र बसु सिंह के समान मंच पर डटे हुए हैं।

उन पर भी पोटैशियम सायनाइड का कोई असर नहीं हुआ। तब कहीं जाकर यह भेद खुला कि उनको नीचा दिखाने के लिए यह सुनियोजित षडयंत्र किया गया था। लेकिन इस प्रतिकूल परिस्थिति में जगदीश चंद्र बसु ने केवल अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा अपितु असाधारण साहस का भी लोहा पूरी दुनिया के सामने मनवा लिया। फिर जब असली पोटैशियम सायनाइड की दो बूँदे उस पौधे पर टपकाईं गईं तो वह पौधा तुरंत कंपकपाते हुए सिकड़ कर मृत्युदशा को प्राप्त हो गया।

इस प्रयोग की सफलता के बाद तो पूरी वैज्ञानिक दुनिया में सर चढ़कर बोलने लगा बंगाल का जादू। सर जगदीश चंद्र बंसु को दो–दो बार विज्ञान के दो अलग–अलग क्षेत्रों यथा भौतिकी शास्त्र और वनस्पति शास्त्र के लिए नोबल पुरस्कार के लिए नामित किया गया। स्वयं को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ नस्ल मानने वाले एडोल्फ हिटलर ने बसु जी को जर्मनी में

सादर आमंत्रित करते हुए कहा कि आप भारत वर्ष जैसे गरीब पिछड़े देश और पराधीन देश में न रहें।

आपको हम जर्मनी में अपने सिर–आँखों पर बैठाएँगे। आपके नाम से जर्मनी में विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी। विश्व के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक आपके हाथ के नीचे अनुसंधान कार्य करेंगे। आपको आपके रिसर्च के लिए जो संसाधन गरीब भारतवर्ष उपलब्ध कराने की बात सोच भी नहीं सकता हम आपको हाथों–हाथ उपलब्ध करा देंगे।

बस आप केवल भारत छोड़कर जर्मनी में आकर बस जाइये। वैसे भी हम जर्मन लोग विश्व की श्रेष्ठतम नस्ल (मास्टर रेस) हैं। आपके हुनर की असली कदर तो हम जर्मन लोग ही कर सकते हैं।

किन्तु सर जगदीश चंद्र बसु को उनके माता–पिता ने जो जन्मजात संस्कार प्रदान किए थे एक बार फिर उनकी श्रेष्ठता सिद्ध हो गई। बसु जी ने हिटलर का यह सुनहरा प्रस्ताव यह कहकर ठुकरा दिया कि भले ही मेरी भारत माता गरीब हैं, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई है किन्तु वे मेरी जन्मभूमि हैं। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

उनके विषय में पाश्चात्य वैज्ञानिक जगत में यह ख्याति मशहूर थी कि सर जगदीश चंद्र बसु की वैज्ञानिक सोच और अनुसंधान कार्य तत्कालीन समय से लगभग सौ वर्ष आगे हैं। तभी तो अँग्रेजों ने भी मुक्त कंठ से स्वीकार किया कि बंगाल जो सौ वर्ष पहले करता है सारी दुनिया वह सौ वर्ष बाद करने का प्रयत्न करती है।

**– नागपुर (महाराष्ट्र)**

---

राजकीय मछली

मणिपुर की राजकीय मछली

# पेंग्बा

– डॉ. परशुराम शुक्ल

मणिपुर में पायी जाती है,
मणिपुर इसको भाता।
चीन और म्यांमार देश से,
इसका गहरा नाता।।

झीलों, नदियों, रुके हुए जल,
में आवास बनाती।
जल–पौधों के मध्य हमेशा,
छिपी हुई मिल जाती।।

फुट भर लम्बी, रंग रुपहला,
छोटे शल्कों वाली।
आँखें बड़ी और मुँह छोटा,
तन पर हल्की लाली।।

छोटे–छोटे कीड़े खाकर,
अपना काम चलाती।
और पालतू बन जाने पर,
चिप्स हाथ से खाती।।

आज हमारी नादानी ने,
इस पर ग्रहण लगाया।
मानव ने इसका शिकार कर,
संकट ग्रस्त बनाया।।

**– भोपाल (म. प्र.)**

# विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

# उजाले के फूल

– सुधा रानी तैलंग

बिन्नी को हर वर्ष दीपावली के त्यौहार का बड़ी ही उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है। उसे दीवाली मनाने में बहुत आनन्द आता हैं। अपनी कॉलोनी के केम्पस में नन्हें-नन्हें टिमटिमाते माटी के दीपक, झिलमिल करते रंगीन बल्बों की झालरें व आतिशबाजी उसे बहुत ही अच्छी लगती। कोरोना महामारी के कारण पिछले दो वर्षों से वह दीवाली नहीं मना पाई थी। ऐसे में इस बार वह जोर-शोर से दीवाली मनायेगी। इस बार की दीवाली में वह खूब सारे पटाखे फोड़ेगी, फुलझड़ियाँ जलायेगी। यह सोचकर बिन्नी मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रही थी।

बिन्नी मन ही मन योजना बना ही रही थी तभी पिताजी की आवाज ने उसे चौंका दिया।

''अरे! बिन्नी बिटिया! कहाँ हो तुम? फटाफट तैयारी लगा लो। कल सुबह दस बजे ही हमें निकलना है।'' ''कहाँ जा रहे हैं हम पिता जी? दीवाली का त्यौहार हम इस बार घर में नहीं मनायेंगे?'' बिन्नी ने अपने पिता जी का हाथ पकड़ते हुए कहा।

''बिन्नी बेटा! हर बार दादा-दादी हमारे पास दीवाली मनाने आते हैं पर इस बार हम दीवाली मनाने दादा-दादी के पास बृजपुर जा रहे हैं।'' अब तो रानी बिटिया प्रसन्न।

''पिता जी! आप कितने अच्छे हैं पर मैं आपसे नाराज हूँ कि आपने यह बात हमसे छिपाई क्यों?'' बिन्नी ने मुँह फुलाकर कहा।

''अरे! मैं तो सरप्राइज देना चाहता था इसलिये बताया नहीं। देखो दीवाली के लिये पटाखे, अनार, फुलझड़िया, चॉकलेट, मिठाई ले आया हूँ और कुछ मँगाना हो तो बताओ।''

''पिता जी! दादा जी के लिये एक कैप व धूप का चश्मा और दादी के लिये बड़े अक्षरों की रामायण मँगवाना है।'' ''अरे! इतनी सी बात। बस हम खाना खाकर चलते हैं। तुम अपनी पसंद की ले लेना।'' ''ठीक है पिता जी!''

''राधा! तब तक तुम तैयारी कर लो। हम जरा बाजार होकर आते हैं। तुम्हें कुछ मँगवाना हो तो सूची दे दो।'' बिन्नी के पिता जी ने बिन्नी की माँ से कहा।

''अरे! मुझे कुछ नहीं चाहिये। तुम बाप बेटी ही जाओ बाजार। मैं तैयारी कर लेती हूँ तब तक।''

बिन्नी आज बहुत ही प्रसन्न थी। शहर की दीवाली तो वह हर बार मनाती आई है। पर इस बार गाँव की दीवाली भी तो देखे कैसे मनाई जाती है। रात को उसने फटाफट अपनी सहेलियों को फोन लगा कर गाँव जाने की बात बता दी। आलमारी से कपड़े निकाले और बैग में रखे। दादा जी के लिये कैप व धूप का चश्मा व दादी के लिये रामायण की बड़े अक्षरों वाली किताब जो उसने पिता जी के साथ जाकर खरीदी थी, वह भी रख ली। साथ ही पटाखे, फुलझड़ियाँ, अनार ढेर सारी आतिशबाजी मिठाई, चॉकलेट्स भी रख ली। कितने प्रसन्न होंगे दादा-दादी हमारे साथ इस बार की दीवाली में बिन्नी मन ही मन सोचने लगी।

सुबह होते ही बिन्नी तैयार होकर पिता जी के पास आगे की सीट पर ही बैठ गई। बृजपुर चार घण्टे में वह पहुँच गये। दूर से ही जीप आते देख बिन्नी के दादा जी खेत की मुँडेर से ही हाथ हिलाने लगे। बिन्नी के पिता जी ने जीप वहीं रोक दी। दादा जी को जीप में बैठा कर वह घर आ गये। दादी से लिपटते हुये बिन्नी बोल पड़ी- ''दादी... दादी! इस बार मैं तो दीपावली मनाने पूरे सात दिनों के लिये आपके पास आई हूँ।''

''अरे बेटी! सात दिन ही क्यों तुम तो हमेशा रहो हमारे पास। कितने दिनों बाद मेरी लाड़ो आई है।'' दादी ने प्रसन्नता से निकले आँसुओं को पोंछते हुए कहा।

बृजपुर गाँव में जाकर बिन्नी की माँ तो घर के काम में व्यस्त हो गई। घर की सफाई के साथ दादी के साथ मिलकर बिन्नी की माँ ने कचौड़ी, नमकीन, गुझिया, बेसन के लड्डू, शकरपारे बनाये। बिन्नी को गाँव में बहुत आनन्द आ रहा था। इतना बड़ा घर, आँगन में नीम के पेड़ में बना झूला, अमरूद का पेड़, सामने ही कुएँ का मीठा पानी, पिछवाड़े छप्पर में गंगा-जमुना गायों के नन्हें-नन्हें बछड़े, हरिया तोता, झबरी बिल्ली और झबरू कुत्ता ये

सब बिन्नी को ढेर सारे मित्र मिल गये।

एक दिन बिन्नी दादा जी के साथ खेत देखने के लिये गई तो आते समय उसने रास्ते में मजदूरों की बस्ती को देखा।

बिन्नी ने पहली बार झुग्गी झोपड़ियाँ नंगे, पैर, फटे, कपड़े सूखी रोटी हाथ में लिये बच्चे देखे। फटे कपड़ों में भी बच्चे गिल्ली डंडा, गेंद से खेलते बेहद प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। नन्ही बिन्नी को बेहद आश्चर्य हुआ क्योंकि उसने तो अभी तक आलीशान बंगलों में रहने वाले बच्चे ही देखे थे।

आठ वर्ष की बिन्नी अपनी छोटी सी आयु से कहीं अधिक समझदार थी। उसने दादा जी से पूछा– ''दादू! ये बच्चे फटे पुराने कपड़ों में भी कितने प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। दीवाली में भी ये ऐसे ही रहते हैं?''

''अरे! बिन्नी इन गरीबों के लिये क्या होली और क्या दीवाली? नये कपड़े तो क्या फुलझड़ियाँ पटाखे भी इन्हें नहीं मिल पाते। ये तो दूर से ही पटाखों की आवाज सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं।''

''दादू! हम तो दीवाली में ढेरों कपड़े, चॉकलेट, पटाखे खरीदते हैं और यहाँ के बच्चों के पास अच्छे कपड़े भी नहीं है। इस बार मैं अपने पटाखें, फुलझड़ियाँ व मिठाई, चॉकलेट को इन बच्चों के साथ बाँटकर दीवाली का त्यौहार मनाऊँगी। कितने प्रसन्न होंगे ये बच्चे।'' बिन्नी ने चहकते हुए कहा।

''अरे! बिटिया तुम कितनी समझदार हो। इतनी छोटी हो पर दादी अम्मा जैसी बातें करती हो।'' दादा जी हँसते हुए बोले।

बिन्नी की बातों को सुनकर उनके मुखड़े पर एक अजीब–सी खुशी की चमक आ गई। घर आकर उसने बस्ती के बच्चों को साथ दीवाली मनाने की बात कही।

गाँव की हाट से बच्चों के लिये कपड़े, मिठाइयाँ और फुलझड़िया खरीदी साथ में ढेर सारे माटी के सुन्दर–सुन्दर खिलौने व दीये व रंगोली के रंग। ऐसे में वो इस बार की दीवाली कुछ हट कर अलग अन्दाज से ही मनाना चाहती थी। दादी ने आँगन को गोबर व लाल मिट्टी से लीपा तो बिन्नी ने माँ के साथ बहुत ही सुन्दर–सुन्दर रंगोली बनाई। जगमग दीपों के प्रकाश से पूरा आँगन व छत की मुँडेर जगमगा रहा था।

घर आने के बाद दीवाली की पूजा के बाद बिन्नी अपने दादा–दादी, माँ–पिता जी के साथ मजदूरों की बस्ती में गई। वहाँ जाकर उसने पटाखें, फुलझड़ियों के साथ कपड़े, मिठाई व चॉकलेट के डिब्बे बाँट कर बस्ती के बच्चों के साथ दीवाली मनाई। बस्ती के बच्चे बहुत प्रसन्न थे।

इस बार की दीवाली में बिन्नी ने जो गरीब बच्चों को प्रसन्नता के उपहार बाँटे, उससे पूरे बृजपुर गाँव में खुशियों के दीप जगमगा उठे। सबकी आँखों में एक आशा किरण जगमगाने लगी। दादा जी के साथ पूरे गाँव के लोग सोच रहे थे कि काश! प्रतिवर्ष दीपावली में बिन्नी जैसा ही कोई आये जो उजाले के फूल बिखेर सके।

**– भोपाल (म. प्र.)**

# द्रोणाचार्य जी बने–राजकुमारों के गुरु

– मोहनलाल जोशी

भीष्म जी कौरवों और पाण्डवों के दादा थे। वे सभी राजकुमारों को शस्त्रों की विशेष शिक्षा देना चाहते थे। वे गुरु की खोज कर रहे थे।

एक बार सभी राजकुमार खेल रहे थे। उनकी गेंद एक सूखे कुएँ में गिर गयी। वे गेंद नहीं निकाल सके। तभी वहाँ पर द्रोणाचार्य जी आये। उन्होंने राजकुमारों से सरकण्डे मंगवाये। फिर अपने धनुष से गेंद पर निशाना लगाया। सरकण्डे एक के पीछे एक बींध गये। लम्बी रस्सी बन गयी। अन्तिम सरकण्डे को पकड़कर गेंद निकाल दी।राजकुमार उनकी कला से दंग थे। उन्होंने भीष्म पितामह को पूरी बात बतायी। भीष्म जी को धनुर्विद्या का पारंगत मिल गया। उन्होंने द्रोणाचार्यजी को गुरु बनाया। मन्त्री राजकुमार उनके पास शस्त्र विद्या सीखने लगे। पांडवों का मंझला भाई अर्जुन द्रोणाचार्य का सबसे प्रिय शिष्य बना।

# गुरुभक्त एकलव्य

एक भील बालक था। उसका नाम एकलव्य था। वह धनुष विद्या सीखना चाहता था। वह गुरु– द्रोणाचार्य के पास आया। द्रोणाचार्य जी को प्रणाम किया। उनसे कहा– मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। मैं धनुष विद्या सीखना चाहता हूँ।

द्रोणाचार्य जी ने कहा– मैं राजकुमारों का गुरु नियुक्त हो गया हूँ। तुम किसी दूसरे को गुरु बना लो।

एकलव्य जंगल में लौट आया। उसने द्रोणाचार्य जी को ही गुरु माना था। उसने द्रोणाचार्य जी की मिट्टी की प्रतिमा बनायी। मूर्ति की स्थापना की। वह मूर्ति को प्रणाम करके धनुष चलाने का अभ्यास करता। गलती होने पर प्रतिमा से क्षमा माँगता।

एकलव्य बहुत ही श्रेष्ठ धनुर्धर बन गया। वह धनुष विद्या में पारंगत हो गया। सब कुछ गुरु की कृपा से हुआ।

एक बार द्रोणाचार्य जी वन में घूम रहे थे। उनके साथ कुरु राजकुमार भी थे। उनके साथ एक कुत्ता चल रहा था।

घने जंगल में एकलव्य धनुष विद्या का अभ्यास कर रहा था। उसे देखकर कुत्ता भौंकने लगा। एकलव्य ने एक साथ बहुत सारे तीर छोड़े। कुत्ते का मुँह भर गया। परन्तु उसके एक बूँद भी खून नहीं आया। वह द्रोणाचार्य जी के पास आया। उसे देखकर द्रोणाचार्य जी और राजकुमार चकित रह गये। ऐसा विलक्षण तीरन्दाज उन्होंने कभी नहीं देखा था।

वे सभी एकलव्य के पास आये। एकलव्य ने गुरु को देखकर प्रणाम किया। उसने कहा– मैं आपका शिष्य हूँ। मैं आपकी मूर्ति से ही तीर चलाना सीखा हूँ। द्रोणाचार्य जी ने कहा– तुम मेरे शिष्य हो। मुझे गुरुदक्षिणा में तुम्हारे दाँये हाथ का अँगूठा काटकर दो।

एकलव्य ने तुरंत अँगूठा काटकर दे दिया। गुरु दक्षिणा के इतिहास में वह अमर हो गया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी है। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY




**SURYA ROSHNI LIMITED**
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000
Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

# नन्हा लेखक

– रेनू सैनी

नीरू कबाड़ी का काम करता था। वह बारह वर्ष का हो गया था। उसके माता–पिता दोनों को पटाखों के कारखाने में काम करने के कारण टी. बी. हो गई थी। नीरू के पिता भोलू और माँ भोली ने उसे पटाखों की फैक्ट्री में लगने नहीं दिया। किसी तरह पेट तो पालना था। माँ–बाप दोनों बिस्तर पर और नन्हा नीरू अकेला। उसके ऊपर छोटी सी आयु में ही अपने माता–पिता का उत्तरदायित्व आ गया था। नीरू के माता–पिता ने उसका नाम नीरज रखा था। प्यार से सब उसे नीरू ही बुलाते थे। नीरू का पढ़ने–लिखने का बहुत मन करता था लेकिन पेट की भूख और गरीबी के आगे पढ़ाई–लिखाई की बातें गौण थीं।

इतना ही नहीं बेचारे नीरू ने तो कभी खिलौने भी नहीं देखे थे। जब वह कबाड़ में बच्चों के टूटे–फूटे खिलौने और पत्र–पत्रिकाएँ लेकर आता तो खिलौनों व किताबों को बहुत देर तक देखता रहता। कबाड़ में अधिकांश लोग पुरानी किताबें भी दे दिया करते थे। नीरू ने उन किताबों को पढ़ना सीख लिया था।

उसके पास की झुग्गी में दुलारी रहती थी। वह अच्छे स्वभाव की थी। दुलारी लोगों के घरों में झाड़ू–पौंछा लगाती थी। उसका बेटा जय लगभग नीरू की ही आयु का था। और विद्यालय में छठी कक्षा में पढ़ता था। वह भी कई बार नीरू को पढ़ना सिखाता था। नन्हें नीरू के स्वभाव को देखकर अधिकांश लोग अपनी पत्र–पत्रिकाएँ और टूटा–फूटा सामान उसे ही दिया करते थे। कई लोग उसे अपने पुराने खिलौने भी दे दिया करते थे।

लोगों का अच्छा व्यवहार देखकर नीरू अक्सर कहता, ''पता नहीं लोग कहते हैं कि दुनिया बहुत खराब है। पर मुझे तो अक्सर अच्छे लोग ही मिलते हैं।''

नीरू को किताबें और अखबार तोलते–तोलते उन्हें पढ़ने का चस्का भी लग गया था। यही कारण था कि शाला जाए बिना भी वह हिन्दी बहुत अच्छी तरह लिख और पढ़ लेता था। उसके पास कई ऐसी कॉपियाँ भी आती थीं जिनके पृष्ठ खाली होते थे। नीरू सभी खाली पेजों को एकत्रित करता और उनकी एक कॉपी बना लेता।

उन्हीं कॉपियों पर वह लिखता था। जय गणित में बहुत होशियार था। वह नीरू को गणित पढ़ाता था। एक दिन नीरू एक कहानी की किताब पढ़ रहा था। उसमें कई सारी कहानियाँ थीं। कहानियों को पढ़ते–पढ़ते उसने सोचा कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं भी कहानियाँ लिखूँ? आखिर जब मैं शाला जाए बिना लिख और पढ़ सकता हूँ तो कल्पना का सहारा लेकर

कहानियाँ भी रच सकता हूँ। बस उसी दिन से वह अपनी कॉपी में कहानियाँ लिखने लगा।

एक दिन जय उसके पास आया और बोला, ''यार! कल मेरे शाला में कहानी लेखन की प्रतियोगिता है। मुझे गणित बहुत पसंद है, पर कहानी या लेख लिखने में मुझे बिल्कुल भी रुचि नहीं है। मैं हिन्दी विषय में कमजोर हूँ। मैं क्या करूँ ?''

यह सुनकर जय उदास होकर बोला, ''प्रधानाचार्य जी ने कहा है कि कल सबको शाला में आना आवश्यक है और साथ ही प्रतियोगिता में भी भाग लेना है। उन्होंने यह भी कहा है कि कहानी स्वयं की लिखी हुई होनी चाहिए। यदि वह उन्होंने कहीं से चुराई तो उन्हें दण्ड मिलेगा।'' जय की बात सुनकर नीरू मुस्कराने लगा। उसे मुस्कराते देखकर जय गुस्से से बोला, ''मुझे चिंता हो रही है और तू हँस रहा है।'' नीरू बोला, ''क्योंकि अब तू भी मुस्कराएगा।''

इसके बाद वह अपनी उस कॉपी को उठाकर ले आया जिसमें उसने अपनी स्वरचित कहानियाँ लिखी थीं। नीरू बोला, ''जय! तुम मेरे बहुत अच्छे दोस्त हो। मैं शाला तो नहीं पहुँच पाया लेकिन मैं उन भाग्यवान लोगों में से एक हूँ जो बिना शाला जाए भी तेरे जैसे दोस्तों के कारण पढ़ना–लिखना सीख जाते हैं। अभी तक तुमने मेरी बहुत सहायता की है। काकी भी हमारी खाने–पीने में सहायता करती हैं। तू एक काम कर कि इनमें से कोई भी एक कहानी याद कर ले। ये सारी कहानी मैंने अपनी कल्पना से स्वयं लिखी हैं। ये किसी की चोरी की हुई नहीं है।''

नीरू की बात सुनकर जय उसके गले लग गया और बोला, ''मित्र! तुमने तो मेरी समस्या एक मिनट में हल कर दी।'' इसके बाद उसने नीरू के द्वारा लिखी सभी कहानियों को पढ़ा। उन कहानियों में से कई कहानियाँ बहुत अच्छी थीं। जय ने उनमें से एक कहानी याद कर ली।

अगले दिन शाला में प्रतियोगिता स्थल पर उसने उसी कहानी को हुबहू लिख दिया जो नीरू ने लिखी थी। प्रतियोगिता समाप्त होने के बाद सभी अपनी–अपनी कक्षा में चले गए। दिन बीतते रहे। दीवाली आने वाली थी।

एक दिन जय जब शाला में गया तो उसे प्रधानाचार्य जी ने अपने कमरे में बुलाया। जय डरते–डरते कमरे में गया। उस दिन उसने कक्षा में अपने एक सहपाठी के साथ शरारत की थी, उसे लग रहा था कि प्रधानाचार्य जी अवश्य उसे डाँटेगी। वह सिर झुकाकर उनके कमरे में खड़ा हो गया।

वे उसे देखकर बोलीं, ''बेटा! मुँह लटकाने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो लेखन प्रतियोगिता शाला में आयोजित कराई गई थी उसमें तुम्हें प्रथम पुरस्कार मिला है। यह हमारे शाला के लिए बहुत गौरव की बात है। तुम्हारी हिन्दी की शिक्षिका निर्मला दीदी

तो कह रही थीं कि तुम हिन्दी में अधिक अच्छे नहीं हो लेकिन वह गलत थीं, तुम तो बहुत होनहार हो।''

यह सुनकर जय की आँखों में आँसू आ गए। उसकी माँ ने उसे हमेशा सच बोलना सिखाया था। उसे रोता देखकर प्रधानाचार्य जी बोलीं, ''बेटा! क्या बात है? रो क्यों रहे हो? यह तो खुशी की बात है।'' जय बोला, ''दीदी! निर्मला दीदी सही कह रही हैं। मुझे प्रथम आने की खुशी है लेकिन पुरस्कार का अधिकारी कोई और है।'' इसके बाद उसने नीरू के बारे में सारी बातें बता दी। यह जानकर प्रधानाचार्य जी दंग रह गईं कि बारह वर्ष का नीरू शाला में नहीं पढ़ता है लेकिन फिर भी कहानियाँ रचता है।

प्रधानाचार्य ने नीरू को शाला बुलाने के लिए कहा। नीरू शाला आया। प्रधानाचार्य ने उससे सारी बात जानी। वे बोलीं, ''तुम जैसे होनहार बच्चे को घर पर नहीं बैठना चाहिए। तुम्हें मैं अपने शाला में भर्ती करूँगी। मैंने शाला के प्रबंधन से बात कर ली है। वे तुम्हें बीच में प्रवेश देने के लिए तैयार हैं बस तुम्हें एक छोटी-सी परीक्षा पास करनी होगी। मुझे आशा है कि तुम वह अवश्य पास लोगे।''

इसके बाद उन्होंने परीक्षा का दिन बता दिया। जय ने नीरू को गणित और अँग्रेजी की तैयारी करा दी। हिन्दी में तो नीरू अच्छा था ही। वह परीक्षा में पास हो गया और उसका शाला में प्रवेश हो गया।

जिस दिन वह पहली बार शाला गया, उस दिन छोटी दीवाली थी। वह जय के गले लगकर बोला, ''आज दीवाली पर तुमने मुझे यह बहुतअच्छा उपहार दिया है। अब मैं शाला जाऊँगा और सुबह समाचार-पत्र बेचूँगा। इससे घर का खर्चा भी चलता रहेगा और मैं भी पढ़ पाऊँगा।''

जय बोला, ''नीरू! प्रधानाचार्य जी के साथ ही सभी शिक्षकों ने तुम्हारी हर तरह से सहायता करने के लिए कहा है। अँग्रेजी की अध्यापिका नीना शर्मा कह रही थी कि वह अपनी बेटी साक्षी को तुमसे हिन्दी की ट्यूशन पढ़वाएगी। साक्षी दूसरी कक्षा में पढ़ती है। अब तुम्हें परिवार का पेट भरने के लिए अधिक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।'' जय की बात सुनकर नीरू खुशी से उछल पड़ा। उसके माता-पिता भी खुशी से पुलकित थे। आज उनके घर पहली बार दीवाली की खुशियाँ दिखाई दे रही थीं।

जयंती १५ नवम्बर

# भगवान बिरसा

**स्वतंत्रता की अलख जगाई,**
**जाग उठा पत्ता-पत्ता।**
**काँप उठी थी जिसके डर से,**
**थर-थर अँग्रेजी सत्ता।।**

**वन वीरों में महावीर,**
**बिरसा भगवान कहाते।**
**उनके पावन जन्मदिवस पर,**
**हम सब शीश झुकाते।।**

# बच्चे जैसी खुराक!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

कविता

# मन सबका हर्षाते बच्चे

– बलदाऊ राम साहू

हँसते कभी हँसाते बच्चे
डरते हैं न डराते बच्चे।
कितना स्नेह और अपनापन
सब को गले लगाते बच्चे।
आपस में भी प्यार बाँटते
रिश्ते खूब निभाते बच्चे।
खेल–खेल में बातें करते
सबके मन को भाते बच्चे।
आशाओं की डोरी थामे
मंजिल तक पहुँचाते बच्चे।
उपवन के वे फूल सरीखे
सबका मन हर्षाते बच्चे।

– दुर्ग (छत्तीसगढ़)

पहेलियाँ

# बाल पहेलियाँ

– डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

(१) कभी हरा हूँ, कभी हूँ लाल,
मिल सब्जी में स्वाद बढ़ाऊँ।
खट्टा हूँ पर नहीं करौंदा,
झट से बोलो क्या कहलाऊँ ?

(२) कभी हरी हूँ, कभी हूँ लाल,
मैं सब्जी का स्वाद बढ़ाती।
खाने पर मैं करूँ कमाल,
बोलो बच्चों क्या कहलाती ?

(३) कभी हरा, कभी हूँ पीला,
लोग कहे सब मुझे रसीला।
विटामिन सी से भरपूर,
कोई रहे ना मुझसे दूर।

(४) कभी हरा, कभी मैं पीला,
चार अक्षर का मेरा नाम।
पाचनतंत्र तो खूब बढ़ाता,
जरा बताओ रोली, राम।

(५) कभी हरा, तो कभी है लाल,
फल इक छोटा करे कमाल।
विटामिन सी से है भरपूर,
कोई रहे क्यों इससे दूर ?

(६) प्रथम हटे तो 'ब' बन जाऊँ,
दो अक्षर का मेरा नाम।
खट्टा–मीठा स्वाद है मेरा,
जरा बताओ भोलूराम।

– जालौन (उ. प्र.)

उत्तर :- १) टमाटर, २) मिर्ची, ३) नींबू
४) अमरूद, ५) केरी, ६) सेब।

# पुस्तक परिचय

## नानी और नानू अंतरिक्ष में

मूल्य ४९५/-

प्रकाशन- आत्माराम एण्ड संस, कश्मीर गेट, दिल्ली-११०००६

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल की लेखनी बच्चों के लिए निरंतर कुछ नया सृजन करती रहती है। इस बार वे आपके लिए १५ रोचक नई बाल कहानियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं इस पुस्तक में।

## दादू जी का डब्बा

मूल्य १५०/-

प्रकाशक-अविचल प्रकाशन, सावित्री, १५ वृन्दा विहार, अमृत आश्रम, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

डॉ. आर. पी. सारस्वत मौलिक सृजन के लिए बाल साहित्य के सुपरिचित व्यक्तित्व हैं। इस पुस्तक में वे आपके लिए लाए हैं ढेर से मधुर-मधुर रोचक शिशु गीत।

## चिट्ठी वाले दिन

मूल्य ४००/-

प्रकाशक-पुष्पांजलि प्रकाशन, एल-४६, गली नं.-५, शिवाजी मार्ग, करतार नगर, दिल्ली-५३

डॉ. राकेश चक्र अपनी साहित्यिक प्रतिभा व सांस्कृतिक चेतना के लिए प्रतिष्ठित वरिष्ठ बाल साहित्यकार हैं। डाक विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण रोचक सूचनाओं को बहुत सरस व सुबोध बनाकर प्रस्तुत किया गया है इस कृति में।

## एक विशिष्ट शोध ग्रन्थ

### समकालीन बाल साहित्य की दिशा : डॉ. शकुन्तला कालरा

मूल्य ९५०/-

कुछ साहित्य साधक ऐसे होते हैं जो प्रसिद्धि के लिए कभी बहुत आपाधापी नहीं करते हुए मौन तपस्वी बने अपने युग को कुछ बहुमूल्य अवदान देने के लिए निरंतर जुटे रहते हैं। डॉ. शकुन्तला कालरा ऐसे ही निष्ठावान बालसाहित्य साधकों, चिंतकों, समीक्षकों की श्रेणी का महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। समकालीन बाल साहित्य की चर्चा उनके योगदान के बिना अधूरी ही है।

दूसरे वे साहित्य सेवक हैं जो अपने स्वतंत्र, मौलिक रचनाकर्म के साथ-साथ सतत् उपर्युक्त श्रेणी के साहित्य सर्जकों को सामान्य समाज से अधिकाधिक परिचित कराने के समाजोपकारी कर्म को पूजा की तरह पवित्र मानते हैं। डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' इस दूसरी श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों में अग्रिम पंक्ति के साधक हैं। दोनों की प्रतिभा का परिचय है इस कृति में। डॉ. शकुन्तला कालरा जी के अविस्मरणीय बाल साहित्यिक महत्व पर डॉ. नागेश पाण्डेय ने अत्यन्त सधे हुए संपादन के साथ ४१ उत्तम साहित्यकारों के विवेचन और उद्‌गारों को मणिमाला के समान पिरोकर प्रस्तुत किया है। बाल साहित्य शोधकर्ताओं एवं अध्येताओं के लिए यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण ग्रंथ सिद्ध होगी।

प्रकाशक- नमन प्रकाशन, ४२३१/१, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

# देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सामान्य नियम:-

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।

* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।

* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।

* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२४ है।

* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

## श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२३

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

| प्रथम | द्वितीय | तृतीय | प्रोत्साहन पुरस्कार (२) |
|---|---|---|---|
| १५००/- | ११००/- | १०००/- | ५००/-५००/- |

## मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल उपन्यास की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

## डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन प्रसंग पर आधारित एकांकी'** के लिए निश्चित किया है। पुरस्कार होंगे-

| प्रथम | द्वितीय | तृतीय | प्रोत्साहन पुरस्कार (२) |
|---|---|---|---|
| १५००/- | १२००/- | १०००/- | ५००/-५००/- |

## केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

# रवि लायट्र का विस्मयकारी भारत

लगभग 1370 मी. लम्बे और 762 मी. चौड़े हरियाणा के कुरुक्षेत्र में स्थित थानेसर के ब्रह्म सरोवर को एशिया का विशालतम जलाशय माना गया है जिसके बारे में कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के अंतिम दिन दुर्योधन इसी में आकर छिपा था।

इस देश की न्याय व्यवस्था और नौकरशाही किस स्थिति में है इसके लिए आज़मगढ़ (उ.प्र) में अमिलो गांव के एक किसान लाल बिहारी 'मृतक' का ही उदाहरण पर्याप्त है ।
चचेरे भाइयों द्वारा जायदाद हड़पने की साजिश के अंतर्गत सन 1975 में सरकारी दस्तावेज़ों में इन्हें मृतक घोषित करा दिया गया और तब से 19 वर्षों तक लगातार थाने-कचहरी की दौड़ इन्हें इसलिए लगानी पड़ी ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि यह ज़िंदा हैं, मरे नहीं हैं।

साढ़े चार साल के मैराथन धावक बुधिया (अवूगा) सिंह ने सन 2006 में पुरी से भुवनेश्वर तक की 65 किलोमीटर की दूरी मई की तपती दोपहरी में सात घंटे और दो मिनट में तय करके दुनिया का सबसे छोटा मैराथन रनर होने का नया रिकॉर्ड बना कर सबको चकित कर दिया था । नन्हें उस्ताद का यह कारनामा लिम्का बुक ऑफ़ रिकार्ड्स में दर्ज है।

. जोड़ियां ऊपर से बन कर आती हैं परन्तु धरती पर कोई माध्यम तो बनता ही है और पिछली शताब्दी में सबसे पहले सन '70 से ऐसी ही जोड़ियां बनाने में सबके मददगार बने देश की राजधानी के करोलबाग क्षेत्र से 28, रैगरपुरा के प्रोफ़ेसर धरमचन्द अरोड़ा जी जिनके 'रिश्ते ही रिश्ते' तथा 'एक बार मिल तो लें' जैसे आकर्षक स्लोगनों ने उन्हें अपार लोकप्रियता दिलाई और '28 रैगरपुरा उनकी पहचान का पर्याय बन गया।

© gyaanum@gmail.com/ 0 8077554501

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

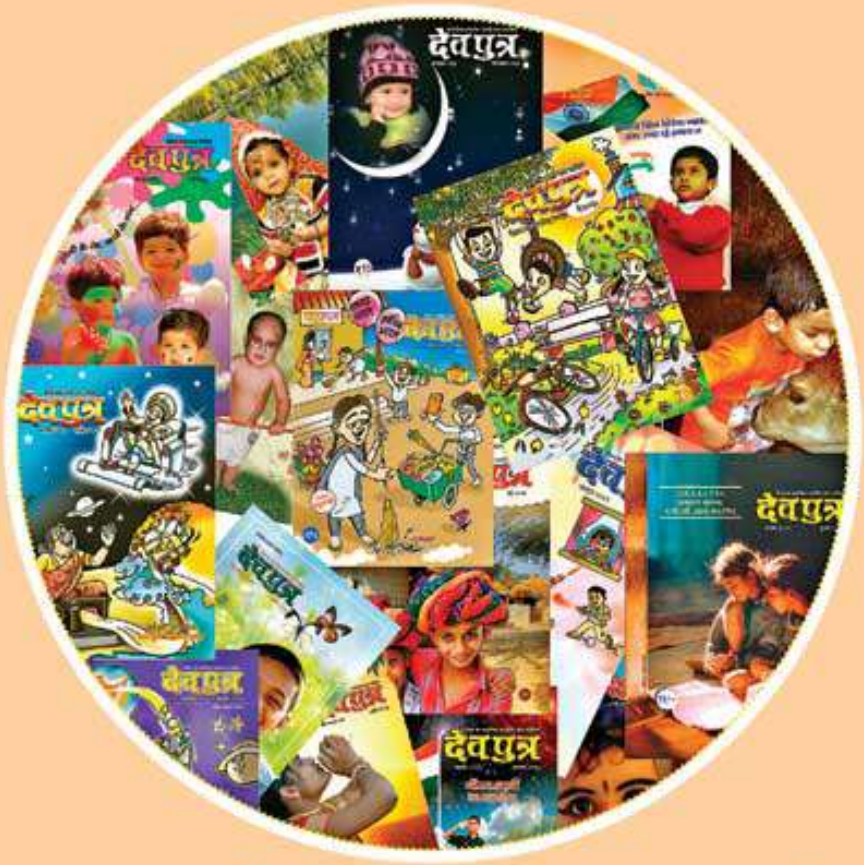


कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना